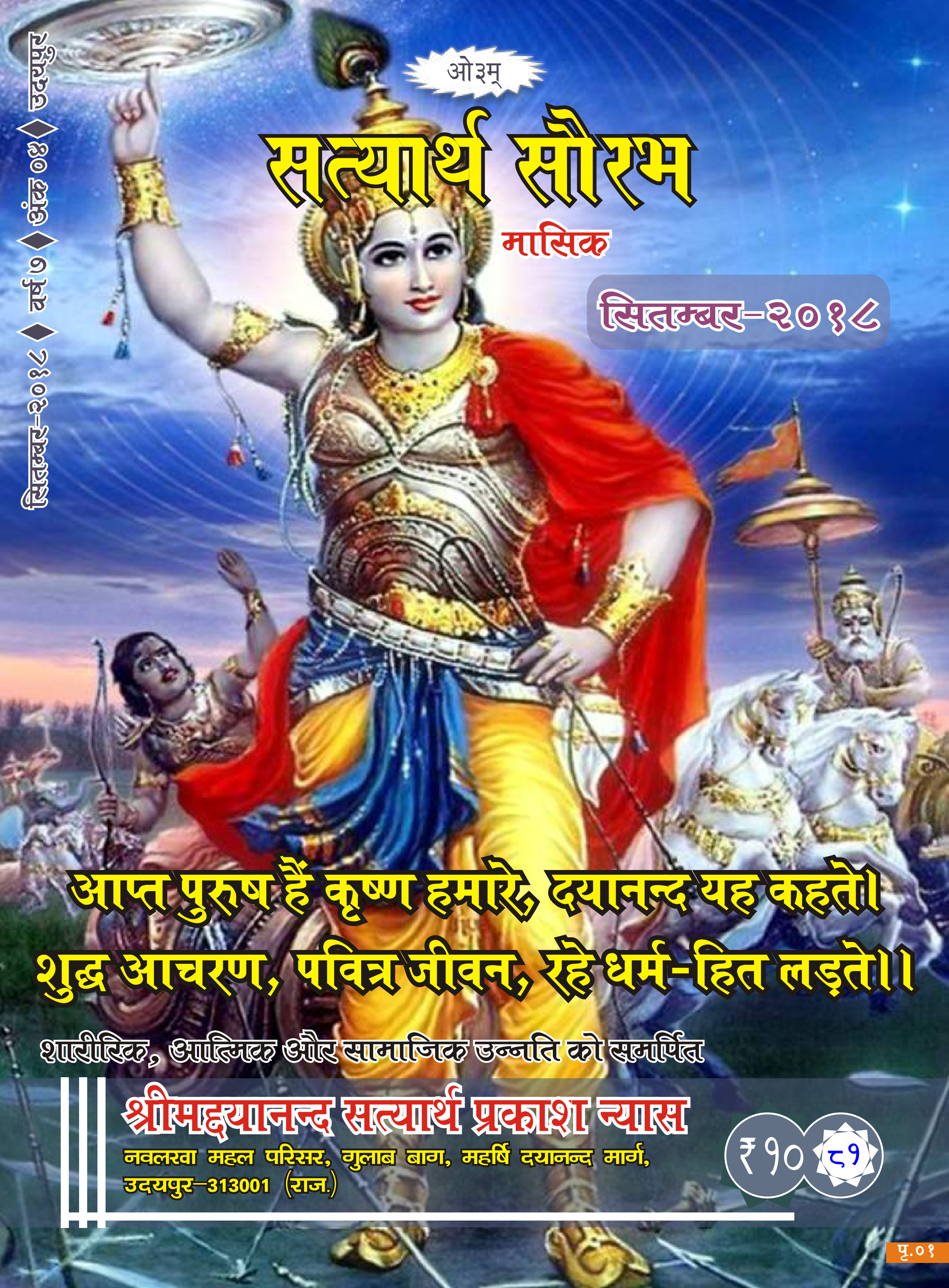

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

सितम्बर-२०१८

सितम्बर-२०१८ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक ०४ ◆ उदयपुर

आप्त पुरुष हैं कृष्ण हमारे, दयानन्द यह कहते।
शुद्ध आचरण, पवित्र जीवन, रहे धर्म-हित लड़ते।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ८१

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
Garam masala
Sambhar masala
Chunky Chat masala
Shahi Paneer masala
MDH DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
Dal Makhani masala
Kitchen King
Chana masala
Pav Bhaji masala
MDH Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११९
भाद्रपद कृष्ण द्वादशी-त्रयोदशी
विक्रम संवत्
२०७५
दयानन्दाब्द
१९४

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

September - 2018

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन	3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २७

२१वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव १७ हलचल

०४ वेद सुधा
१० महर्षि का वेदभाष्य तर्क व .....
१२ ओ३म् की विश्व व्यापकता
१४ बच्चों के व्यवहार पर बड़ों का प्रभाव
१८ १८५७ की क्रान्ति और म. दयानन्द
२० हिन्दी दिवस पर विशेष
२२ तीन चेतन देवता ....
२५ ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता-२
२६ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०९/१८
२८ स्वस्थ रहने की १० अच्छी आदतें
२९ कथा सरित- सेवा ही परम धर्म
३० विकासवाद मिथ्या अवधारणा

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - ७ | अंक - ०४ | द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर मुद्रण

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

वैश्वानर विद्या और ऋग्वेद

छान्दोग्य उपनिषद् के पाँचवें प्रपाठक के ग्यारहवें खण्ड से लेकर चौबीसवें खण्ड तक वैश्वानर विद्या का वर्णन हुआ है। वर्णन है कि एक समय औपमन्यव, सन्ययज्ञ, इन्द्रद्युम्न, जन, बुडिल मिलकर विचार करने लगे कि आत्मा क्या है और ब्रह्म क्या है, **'को नु आत्मा किं ब्रह्मेति'।** जब वे इस विषय पर गहन चिन्तन करने पर भी कुछ निर्णयात्मक निश्चय पर नहीं पहुँच सके तो उन्होंने

महर्षि उद्दालक के पास जाकर इस विषय पर उनसे समाधान चाहा। महर्षि उद्दालक भी इस विषय का ज्ञान नहीं रखते थे परन्तु उन्हें यह ज्ञात था कि कैकय नरेश अवश्पति इस विषय के ज्ञाता हैं अतः उन्होंने प्रस्ताव रखा कि हम सभी मिलकर अश्वपति के पास चलकर वैश्वानर विद्या पर चर्चा करें। अश्वपति ने उनको वैश्वानर आत्मा के विषय में जो ज्ञान दिया वह उपनिषद् के बारहवें काण्ड से प्रारम्भ होकर चौबीसवें काण्ड पर समाप्त हो जाता है।

अश्वपति ने कहा कि जो समस्त विश्व का स्वामी है, उसे वैश्वानर कहते हैं। ब्रह्म एकदेशी नहीं है। द्युलोक उसकी मूर्धा, सूर्य उसके नेत्र, वायु उसका प्राण, आकाश उसका मध्य शरीर, जल उसका मूत्राशय और पृथ्वी उसके पाँव हैं। इस प्रकार इन छहों अंगों से ब्रह्मा का विराट् शरीर बना है। इसलिये जिस समष्टि में उसके इन छहों अंगों को एकत्र रूप में देखा जाता है उसी का ज्ञान वैश्वानर आत्मा है।

यह तो छान्दोग्य उपनिषद् का वर्णन हुआ। अब हम पाठकों को ऋग्वेद में वैश्वानर आत्मा के विषय में वर्णित ज्ञान को प्रस्तुत करना प्रारम्भ करते हैं। ऋग्वेद मण्डल ६ के सूक्त ७, ८ और ९ में वैश्वानर आत्मा का वर्णन हुआ है। तीनों सूक्तों का ऋषि भारद्वाजो बार्हस्पत्यः और देवता वैश्वानर है। इन ऋचाओं में वैश्वानर का अर्थ सब मनुष्यों के हितकर प्रभु से लिया है। सूक्त ७ की प्रथम ऋचा में वैश्वानर शब्द सब लोकों के हित में प्रवृत्त संन्यासी से लिया गया है। इसके उपरान्त आगे सभी ऋचाओं में वैश्वानर शब्द सबके हितकारी परमपिता परमेश्वर के लिये ही आया है।

नाभिं यज्ञाना सदनं रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त।
वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः।। – ऋग्वेद ६/७/२

प्रभु के उपासक लोग (अभि) लक्ष्य करके (सं नवन्त) सम्यक् स्तुति करते हैं। जो प्रभु (यज्ञानां नाभिम्) सब यज्ञों के प्रबन्धक हैं अथवा सब यज्ञों के केन्द्र हैं। (रणीणाम् सदनम्) सभी ऐश्वर्यों के आगार हैं। वे प्रभु (महाम्) महान् हैं और (आहावम्) सदैव पुकारे जाने के योग्य हैं। इस (वैश्वानर) सब मनुष्यों के हितकर प्रभु को (देवाः) देववृत्ति के व्यक्ति (जनयन्त) अपने हृदय में प्रादुर्भूत करते हैं। जो प्रभु (अध्वराणाम् रय्यम्) हिंसारहित यज्ञों के संचालक हैं तथा (यज्ञस्य केतुम्) इन सब यज्ञों के प्रकाशक हैं।

भावार्थ– वैश्वानर प्रभु सभी यज्ञों (श्रेष्ठ कर्मों) के केन्द्र हैं। सभी ऐश्वर्यों के भण्डार हैं। मनुष्यों के हितकारी प्रभु सभी के द्वारा प्रार्थना किए जाने के योग्य हैं। देववृत्ति के पुरुष अपने हृदय में वैश्वानर प्रभु के प्रकाश का दर्शन करते हैं।

त्वद्विप्रो जायते वाज्यग्ने त्वद्वीरासो अभिमातिषाहः।
वैश्वानर त्वमस्मासु धेहि वसूनि राजन्त्स्पृहयाय्याणि।। – ऋग्वेद ६/७/३

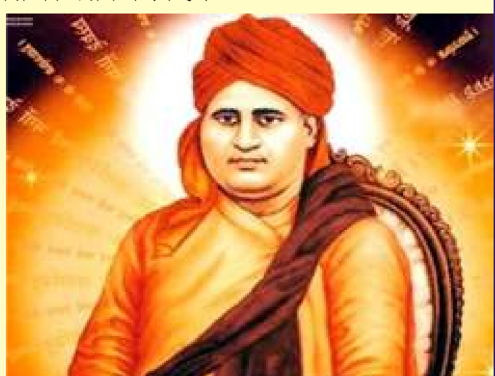

हे (अग्ने) अग्रणी प्रभो। (त्वद्) आप से ही (विप्रः) ज्ञानी पुरुष (वाजी) यज्ञशील (जायते) बनता है। (त्वद्) आप से ही (वीरासः) शत्रुओं को विशेष रूप से कम्पित करने वाले क्षत्रिय लोग (अभिमातिषाहः) शत्रुओं का पराभव करने वाले होते हैं। हे (राजन्) देदीप्यमान (वैश्वानर) सब मनुष्यों के हितकर व आगे ले चलने वाले (नृनये) प्रभो। (त्वम्) आप (अस्मासु) हमारे में (स्पृहय्याणि) चाहने योग्य (वसूनि) धनों को (धेहि) धारण कीजिए।

भावार्थ– वैश्वानर प्रभु की उपासना से ही ज्ञानी पुरुष यज्ञशील बनता है। आपकी

उपासना से ही क्षत्रिय शत्रुओं को हराने वाला बनता है। आपकी कृपा से हमें श्रेष्ठ धनों की प्राप्ति होती है।

त्वां विश्वे अमृत जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते।
तव क्रतुभिरमृतत्वमायन्वैश्वानर यत्पित्रोरदीदेः।। - ऋग्वेद ६/७/४

हे (अमृत) मरण धर्म रहित प्रभो। (विश्वे देवाः) सब देववृत्ति के व्यक्ति (जायमानं त्वाम्) प्रादुर्भूत होते हुए आपको (अभि सं नवन्ते) प्राप्त होते हैं। (शिशुं न) जो आप शिशु के समान हैं, इन देवों की बुद्धि को सूक्ष्म बनाते हैं। (तव क्रतुभिः) आपके प्रज्ञानों व सामर्थ्यों से ही देव (अमृतत्वम्) अमरता को (आयन्) प्राप्त होते हैं। हे (वैश्वानर) सब मनुष्यों का हित करने वाले प्रभो (यत्) जब आप (पित्रोः) मस्तिष्क और शरीर में (अदीदेः) दीप्त होते हैं।

भावार्थ- प्रभु मरण धर्म रहित हैं। देववृत्ति के व्यक्ति ही आपको प्राप्त होते हैं। परमात्मा शिशु के समान निर्मल हैं। परमात्मा की उपासना से ही देववृत्ति के व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

वैश्वानरस्य विमितानि चक्षसा सानूनि दिवो अमृतस्य केतुना।
तस्येदु विश्वा भुवनाधि मूर्धनि वयाइव रुरुहुः सप्त विस्रुहः।। - ऋग्वेद ६/७/६

(वैश्वानरस्य) सब मनुष्यों के हित करने वाले (अमृतस्य) अविनाशी प्रभु के (चक्षसा केतुना) सब पदार्थों का प्रकाश करने वाले ज्ञान से (दिवः सानूनि) ज्ञान के शिखर (विमितानि) निर्मित होते हैं। (विश्वा भुवना) सब लोक लोकान्तर (इत् उ) निश्चय से (तस्य अधि मूर्धनि) उस प्रभु की महत्ता पर ही आश्रित हैं। उस प्रभु से ही (वयाः इव) शाखाओं की तरह (सप्त विस्रुहः) सात ज्ञान स्रोत (रुरुहुः) वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

भावार्थः- वैश्वानर प्रभु सभी मनुष्यों का हित करने वाले हैं। परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान से ही ज्ञान के शिखर उत्पन्न होते हैं। निश्चय से सब लोक-लोकान्तर प्रभु पर ही आश्रित हैं।

पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू सहः प्र नु वोचं विदथा जातवेदसः।
वैश्वानराय मतिर्नव्यसी शुचिः सोमइव पवते चारुरग्नये।। - ऋग्वेद ६/८/१

(पृक्षस्य) सर्वव्यापक (वृष्णः) सब सुखों की वर्षा करने वाले (अरुषस्य) आरोचमान (जातवेदसः) उस सर्वज्ञ प्रभु के (सहः) शत्रु-मर्षक सामर्थ्य को (नु) अब (विदथा) उस ज्ञान यज्ञ में (नु) निश्चय से (प्रवोचम्) प्रकर्षेण प्रतिपादित करता हूँ। उस (वैश्वानराय) सब नरों का हित करने वाले (अग्नये) अग्रणी प्रभु के लिए (सोमः इव) सोम के समान (चारुः) सुन्दर (शुचिः) पवित्र (नव्यसी) अतिशयेन (प्रशस्यमतिः) मनन पूर्वक की गई स्तुति (पवते) प्राप्त होती है। मैं उस प्रभु का स्तवन करता हूँ। इससे मेरे सोम का भी रक्षण होता है।

भावार्थ- वैश्वानर प्रभु सब पर सुखों की वर्षा करने वाले हैं। मैं उस सर्वव्यापक शक्तिशाली प्रभु की स्तुति करता हूँ इससे मेरे जीवन में सुन्दरता और पवित्रता आती है।

स जायमानः परमे व्योमनि व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत।
व्य१न्तरिक्षममिमीत सुक्रतुर्वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत्।। - ऋग्वेद ६/८/२

अर्थः- (सः) वह (व्रतपाः) सब व्रतों का रक्षक (अग्निः) अग्नि स्वरूप परमात्मा (परमे व्योमनि) इस परम आकाश में (जायमानः) सब लोक-लोकान्तरों को जन्म देता हुआ (व्रतानि अरक्षत) इन सूर्य, विद्युत, अग्नि आदि देवों के व्रतों (नियमों) का रक्षण करते हैं। वे (सुक्रतुः) शोभनकर्मा (वैश्वानरः) सर्वहितकारी प्रभु ही (अन्तरिक्षम्) इस अन्तरिक्ष लोक को (वि अमिमीत) विशेष निर्माण पूर्वक बनाते हैं। वे प्रभु ही (महिना) अपनी महिमा से (नाकं अस्पृशत) मोक्ष सुख का स्पर्श करते हैं।

भावार्थ- सब लोक-लोकान्तरों का निर्माण प्रभु ही करते हैं, वैश्वानर प्रभु ही इनको नियमित गति प्रदान करते हैं। वे ही मोक्ष को धारण किये हुए हैं।

अस्माकमग्ने मघवत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम्।
वयं जयेम शतिनं सहस्त्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः।। - ऋग्वेद ६/८/६

अर्थः- हे (अग्ने) तेज स्वरूप परमात्मन्। (अस्माकं मघवत्सु) हमारे यज्ञशील पुरुषों में (सुवीर्यम्) उत्तम बल को (धारय) धारण

कीजिए जो कि (अनामि) शत्रुओं से नमनीय नहीं है, (क्षत्रम्) हमें घावों से बचाने वाला है। जो (अजर) कभी जीर्ण होने वाला नहीं है। हे (वैश्वानर) सब मनुष्यों के हितकारी (अग्ने) तेज स्वरूप परमात्मन्। (वयम्) हम (तव ऊतिभिः) आपके रक्षण के द्वारा (वाजम्) बल का (जयेन) विजय करें जो (शतिनम्) हमारे लिए सौ वर्ष तक चलने वाला है और (सहस्त्रिणम्) हमें सदा प्रसन्न रखने वाला है।

भावार्थ- वैश्वानर प्रभु से प्रार्थना है कि वह हमारे यज्ञशील पुरुषों में उत्तम बल धारण करावें। ऐसा बल जो कभी भी शत्रुओं से हारने वाला नहीं हो। प्रभु द्वारा प्रदत्त शक्ति से हम सौ वर्ष तक आनन्द पूर्वक जीने वाले बनें।

अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः।
वैश्वानरो जायमानो न राजावातिरज्ज्योतिषाग्निस्तमांसि।। - ऋग्वेद ६/९/१

अर्थ- 'अहः' शब्द दिन का वाचक है। परन्तु कृष्ण विशेषण लगाने पर यह रात्रि को भी प्रतिपादित करता है। (कृष्णं अह) अन्धकार के कारण कृष्ण वर्ण वाली यह रात्रि (च) तथा (अर्जुनम् अहः) सूर्य किरणों से प्रकाशित उज्ज्वल दिन (वेद्याभिः) अनुकूलतया ज्ञातव्य अपनी प्रवृत्तियों से (रजसी) सब लोकों का रंजन करते हुये (विवर्तेत) पर्यावृत हो रहे हैं। चक्राकार गति में निरन्तर चलते हुए ये लोक-लोकान्तरों का रंजन कर रहे हैं। (वैश्वानरः) वह सब मनुष्यों का हितकारी प्रभु (राजा न) एक शासक के समान (जायमानः) इस दिन-रात के चक्र में अपनी महिमा के द्वारा प्रकट हो रहा है। प्रभु के शासन में ही ये चल रहे हैं। (अग्निः) ये अग्रणी प्रभु (ज्योतिषा) अपनी ज्योति से (तमांसि) अन्धकारों को (अवातिरम्) विनष्ट करते हैं।

भावार्थ- दिन-रात्रि का चक्र लोक-लोकान्तरों का रंजन करता है। वैश्वानर प्रभु अपनी महिमा से इस दिन-रात्रि के चक्र को एक शासक के समान चलाता है। ज्योतिस्वरूप परमात्मा की ज्योति से ही अन्धकार दूर होता है।

स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति।
य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश्चरन्परो अन्येन पश्यन्।। - ऋग्वेद ६/९/३

अर्थ- (सः इत्) वे प्रभु ही (तन्तुम्) यज्ञ वस्त्र के तन्तु स्थानीय गायत्र्यादि छन्दों को (विजानाति) जानते हैं। और (सः) वे ही (ओतुम्) तिरश्चीन सूत्र-भूत यजुओं को जानते हैं। (सः) वे ही (ऋजुथा) समय के अनुसार (वक्तवनि) वक्तव्य कर्त्तव्य कर्मों का (वदाति) उपदेश करते हैं। (यः) जो (ईम्) निश्चय से (चिकेतत्) जानता है। वह सर्वज्ञ प्रभु ही (अमृतस्य) अमृतत्व के (गोपा)

21वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव 6 से 8 अक्टूबर,2018
अधिकाधिक संख्या में परिवार व इष्टमित्रों सहित पधारें।

रक्षक हैं। (परः) दूसरे होते हुए भी वे प्रभु (अवः चरन्) यहाँ भूलोक में विचरते हैं। सर्वत्र उस प्रभु की सत्ता है। (अन्येन) अपने से अन्य इस जीव के हेतु से (पश्यन्) वे इन सब लोक-लोकान्तरों को देखते हैं।

भावार्थ- वैश्वानर प्रभु ही सप्त छन्दों के ज्ञाता हैं। वे ही समय के अनुसार कर्त्तव्य कर्मों का उपदेश करते हैं। वे प्रभु ही मोक्ष के रक्षक हैं। सर्वत्र उन्हीं की सत्ता है।

विषय का अधिक विस्तार न करके केवल एक ऋचा पर और मनन करके लेखन क्रिया को विराम देते हैं।

विश्वे देवा अनमस्यन्भियानास्त्वामग्ने तमसि तस्थिवांसम्।
वैश्वानरोऽवतूतये नोऽमर्त्योऽवतूतये नः।। - ऋग्वेद ६/९/७

अर्थ- (तमसि तस्थि वांसम्) हमारे लिए अन्धकार में स्थित, हमारे से एकदम अज्ञात, हे (अग्ने) तेजस्वी प्रभु। (त्वाम्) आपको (विश्वे देवाः) सब देववृत्ति के पुरुष (भियाना) पापों के दण्ड से भयभीत होते हुए (अनमस्यन्) नमस्वनर करते हैं। अदृश्य भी आपके प्रति झुकते हैं। उन देववृत्ति वाले पुरुषों की यही आराधना होती है कि (वैश्वानर) सबके हितकारी प्रभु (ऊतये) रक्षा के लिए हमें (अवतु) रक्षित करें।

भावार्थ- देववृत्ति के पुरुष प्रभु का स्मरण करते हुए पाप करने से भयभीत होते हैं। वैश्वानर प्रभु से सभी अपनी रक्षा की प्रार्थना करते हैं। इति शम्।

- शिवनारायण उपाध्याय
शास्त्री नगर, दादाबाड़ी कोटा

न्याय के नाम पर अन्याय

आसाम के खाला गाँव के निवासी मचल लालुंग को पुलिस ने मारपीट के एक केस में १९५१ में जब वह २३ वर्ष का था तब गिरफ्तार किया। वर्षों तक इसकी न्यायालय में सुनवायी ही नहीं हुयी। जेल में जो भी व्यवहार उसके साथ हुआ हो वह मानसिक बीमार हो गया ऐसा बताया जाता है। उसे मानसिक चिकित्सालय में भर्ती करा दिया गया। जब ठीक हो गया तो असंवेदनशीलता की हद देखिए कि उसे छोड़ने के बजाय वापस गोहाटी जेल भेज दिया गया (जब कि तब तक वह जेल में उतने वर्ष बिता चुका था कि उसपर जो गंभीर चोट पहुँचाने का चार्ज लगाया था उसकी सजा भी दी जाती तो वह भी पूरी हो जाती) इस बीच घरवाले भी भूल चुके कि उनका कोई परिजन जेल में है। जब एक सामाजिक संगठन को यह ज्ञात हुआ तो उसके प्रयत्नों के फलस्वरूप ५४ वर्ष के बाद उसे जेल से २००५ में मुक्त किया गया। न्याय व्यवस्था के बीच पलता यह अन्याय का भयंकरतम चेहरा है। इस मामले में उच्चतम न्यायलय ने उसे ३ लाख का मुआवजा दिया पर यह राशि क्या उसकी जवानी लौटा सकती थी? हर व्यक्ति की भाँति एक छोटे से घर का उसका सुन्दर सपना कोई पूरा कर सकता था? इस दर्द को वही जान सकता है जो इससे गुजरा है। और मचल की मौत २५ दिसम्बर २००७ को हो गयी। यह व्यक्ति ५४ वर्ष तक अंडर ट्रायल ही रहा। उसका सारा जीवन जेल की सलाखों के बीच गुजरा। सरकार द्वारा इसको दिए जा रहे १००० रुपये प्रतिमाह भी यह दो वर्ष ही ले सका। लालुंग का दर्द रोंगटे खड़े कर देता है। उसके जीवन पर एक लघु फिल्म 'Freedom of edge' निर्मित की गयी। ऐसे लाखों लालुंग अभी भी कानून की सुस्त रफ्तार के शिकार हैं। अंडर ट्रायल वे लोग हैं जिन्हें किसी अपराध के लिए पुलिस द्वारा गिरफ्तार तो किया गया परन्तु न्यायालय द्वारा उन्हें दोषी करार अभी तक नहीं दिया गया है। भारतीय न्यायालयों में देश भर में सवा तीन करोड़ मुकदमे लंबित हैं। अंडरट्रायल व्यक्तियों की संख्या के बारे में जानकर चौंक जाना पडेगा। जी हाँ टाइम्स ऑफ इण्डिया में छपे समाचार के अनुसार देश भर में ३.८१ लाख कैदी जेल में हैं जिनमें से २.५४ लाख अंडरट्रायल हैं। इनमें से एक बहुत बड़ी संख्या में अंडरट्रायल ऐसे हैं जो उतनी सजा से भी ज्यादा सजा काट चुके हैं जो उन्हें दोष सिद्ध होने पर मिलती। यह न्याय के आवरण में छिपा अन्याय है या नहीं? इन्ही अंडरट्रायल एवं Pre Trial detention के दर्द के बारे में जस्टिस वी.आर. कृष्णा अय्यर ने निम्न शब्दों में बयान किया-

"The consequences of pretrial detention are grave. Defendants presumed innocent are subjected to psychological and physical depravation of jail life, usually under more onerous conditions than are imposed on convicted defendants. The jailed defendant loses his job if he has one and is prevented from contributing to the preparation of his defense. Equally important, the burden of his detention frequently falls heavily on the innocent members of his family."

अगर न्याय त्वरित नहीं है तो वह अन्याय ही है। वस्तुतः व्यक्ति की स्वतंत्रता, संपत्ति, जीवन तथा अस्मिता की रक्षा करना राज्य का प्राथमिक दायित्व है। यह ठीक है कि कोई व्यक्ति अपराध कारित करता है तो उसे दण्ड मिलना ही चाहिए। यह भी

राज्य का प्राथमिक दायित्व है ऐसा होने पर ही अन्यों की स्वतंत्रता, संपत्ति, जीवन तथा अस्मिता की रक्षा हो सकती है। परन्तु न्याय होने में देरी अन्याय का सबब न बने यह सुनिश्चित करना आवश्यक है। ऐसे न जाने कितने केस हैं जिनमें व्यक्ति को दो या दो से भी अधिक वर्ष जेल में बन्द हुए हो गए और मुकदमे की शुरुआत भी नहीं हुयी अथवा ३, ४ अथवा ५ वर्ष तक व्यक्ति जेल में रहा और बाद में निर्दोष साबित हुआ। ऐसे में उसके द्वारा जेल में व्यतीत समय, उसके कष्ट, उसकी व उसके परिवार की सामजिक प्रतिष्ठा किस प्रकार लौटायी जा सकती है? क्योंकि आम मानसिकता यही है कि जिसके घर पुलिस आ भी गयी वहाँ कुछ न कुछ गैरकानूनी है, जेल तो फिर बहुत बड़ी बात है। अगर इन दिनों वह जमानत पर जेल से बाहर रहता और कानूनी कार्यवाहियों में भाग लेता रहता तो फिर निर्दोष सिद्ध होने पर प्रतिष्ठा तथा अन्य सन्दर्भों में कम नुकसान होता। सारी जद्दोजहद जमानत की है। जमानत किसे दी जाय किसे नहीं यह महत्वपूर्ण विषय है। भारत के सी.जे.आई. जस्टिस दीपक मिश्र ने अंडरट्रायल्स की समस्या पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इसका प्रमुख कारण जमानत न देना माना है। अतः न्याय हो अन्याय नहीं यह ध्यान रखना राज्य का परम कर्तव्य है।

मोटे तौर पर अपराधों को दो भागों में विभाजित किया है एक जमानती तथा दूसरे गैर जमानती। जमानती अपराधों में पुलिस अथवा न्यायालय द्वारा आराम से बेल दे दी जाती है जबकि गैर जमानती में न्यायाधीश को विचार करना होता है कि जमानत दी जाय अथवा नहीं। और यहीं से पुलिस और कोर्ट का आतंक पैदा होता है। प्रायः देखा जाता है कि साधारण से सिविल प्रकृति के केसेज में भी उन धाराओं को समावेशित कर दिया जाता है जो गैर जमानती होती हैं। होना यह चाहिए कि अन्वेषण अधिकारी अथवा मजिस्ट्रेट यह देखें कि प्रथमदृष्ट्या यह धारा लागू होती भी है या नहीं, पर इस बिन्दु पर कोई भी ज्यादा गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता अनुभव नहीं करता। चाहे इसका कारण 'वर्क-प्रेशर' हो पर यह असंवेदनशीलता निरपराध को महंगी पड़ती है। उसका मान-सम्मान सब दांव पर लग जाता है। जमानत न होने से जेल में बन्द उस व्यक्ति के समस्त मौलिक अधिकारों का हनन होता है। राजस्थान के एक मंत्री महोदय पर एक महिला ने बलात्कार का आरोप लगाया। उनकी गिरफ्तारी हुयी। तीन वर्ष जेल में रहने के पश्चात् न्यायालय द्वारा उन्हें निर्दोष पाया गया। अब वह भले ही जेल से बाहर हैं पर उनका मान-सम्मान सब उजड़ चुका है। कौन-सा ऐसा 'क्म्पेंसेशन' है जो उनकी खोयी इज्जत वापस दिला सके?

अंडरट्रायल में अनेक तो ऐसे हैं जिन्होंने एक भी बार न्यायालय का मुँह भी नहीं देखा और वे जेल में वर्षों से बन्द हैं। ऐसा नहीं है कि किसी को इसकी चिन्ता नहीं है।

उच्चतम न्यायालय ने 'हुसैनआरा खातून बनाम बिहार सरकार' में इस व्यवस्था को आड़े हाथों लिया तथा गंभीर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि यह संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार जो कि अनुच्छेद २१ में प्रत्येक भारतीय को दिए गए हैं, का अतिक्रमण है। कोर्ट ने कहा कि त्वरित न्याय संवैधानिक मेंडेट है जिसकी पालना अनिवार्य है; इसे फंड की कमी का बहाना बनाकर टाला नहीं जा सकता। शीर्ष न्यायालय के इस रुख के पश्चात् बिहार सरकार ने १८००० कैदियों को रिहा किया। मान्य न्यायालय का विचार अनेक अवसरों पर इस सन्दर्भ में यह आया कि सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा जमानत के प्रावधानों पर सहानुभूति पूर्वक विचार किया जाता तो स्थिति इतनी भयावह व क्रूर नहीं होती।

हुसैनआरा के केस में ही मान्य उच्चतम न्यायालय ने राय दी कि यदि दोषी की अपने समुदाय में अच्छी पैठ है और वह गायब नहीं हो सकता तो संतुष्ट होने पर न्यायालय व्यक्तिगत मुचलके पर दोषी को जमानत पर रिहा कर सकता है। समुदाय में ऐसी पकड़ जिससे कि वह भाग नहीं सकता इसे सुनिश्चित करने के लिए न्यायालय निम्न तथ्यों को ध्यान में रख सकता है-

१. समुदाय में उस व्यक्ति के रहने की अवधि
२. उसकी नौकरी, व्यापार आदि की जानकारी एवं वित्तीय स्थिति
३. उसके पारिवारिक सम्बन्ध एवं पृष्ठभूमि
४. उसकी प्रतिष्ठा, चरित्र, पूर्वचरित्र
५. उसका पिछला आपराधिक रिकार्ड, यदि कोई है

६. समुदाय के प्रतिष्ठित व्यक्ति जो उसकी विश्वसनीयता की गारण्टी लें

७. अपराध की प्रकृति और उसमें उसके दोषसिद्ध होने की संभावना

८. अन्य ऐसा कोई तथ्य जो दोषी के उसके समुदाय से जुड़ाव को प्रकट करता हो एवं कोई ऐसी रिस्क जिससे दोषी के न्यायालय के समक्ष जान-बूझकर अनुपस्थित रहने कि संभावना हो।

अगर जमानत देने वाले अधिकारी माननीय उच्चतम न्यायलय के उपरोक्त निर्देशों का ध्यान सहानुभूतिपूर्वक रखें तो अंडरट्रायल व्यक्तियों की समस्या का समाधान काफी हद तक हो सकेगा।

तारीखों पर तारीख एक अन्य ऐसी समस्या है जो त्वरित न्याय के रास्ते में बहुत बड़ी बाधा है। इस पर रोक लगानी ही होगी। जब डिफेन्स के पास कुछ नहीं होता तो इसी का आश्रय लिया जाता है। कुछ वकील adjournment के विशेषज्ञ होते हैं। अभी अपराध दण्ड प्रक्रिया संहिता में 'तीन तारीखों से अधिक नहीं' का विधान किया है पर यह कब तक अमल में आएगा पता नहीं। मुकदमे से सम्बन्धित जो महत्वपूर्ण गवाह हैं उनकी शीघ्र आवश्यक उपस्थिति त्वरित निपटारे का अनिवार्य हिस्सा है। वीडियो कान्फ्रेंसिंग इसका एक अद्भुत इलाज है। ऐसी सुविधाएँ कम से कम जिला न्यायालय पर विकसित की जायं तो दूर दराज के गवाहों की गवाही त्वरित होगी। कुछ ऐसे भी गवाह होते हैं जो महत्वपूर्ण नहीं होते उनको छोड़ देने पर भी विचार करना होगा।

सभी अदालतों को फास्ट ट्रेक स्टाइल में चलाने का प्रयत्न करना होगा। अदालतों की संख्या बढानी होगी। यद्यपि इसके लिए आवश्यक फंड्स का रोना स्वाभाविक है परन्तु निर्दोषों के मौलिक अधिकारों को सम्मान देना है और दोषियों को तुरन्त सजा देकर आम नागरिक का कानून व्यवस्था में विश्वास कायम रखना है तो यह करना ही होगा।

इस क्षेत्र में कुछ आशा बँधती है। अभी त्वरित न्याय के कुछ महत्वपूर्ण निर्णय सामने आये हैं जो कि इस आलेख को लिखने में प्रेरक बने। हाल में दुष्कर्म के मामलों में अदालतों ने ताबड़तोड़ सुनवाई कर कम से कम समय में सजा सुनाने का रिकॉर्ड बनाया। चित्रदुर्ग की जिला व सत्र अदालत ने पत्नी की हत्या के ११ दिन बाद ही पति परमेश्वर स्वामी (७५) को आजीवन कैद की सजा सुना दी। जज एसबी वस्त्रमुत्त ने स्वामी पर ५,००० रुपये का जुर्माना भी लगाया। अभियोजन पक्ष के मुताबिक, वाल्से गाँव के परमेश्वर स्वामी ने बेवफाई के शक में पत्नी पुत्ताम्मा (६३) की २७ जून को हत्या कर दी थी।

इन्दौर की एक जिला अदालत ने एक बच्ची के साथ बलात्कार कर उसकी हत्या कर देने वाले नवीन गड़के को तीन सप्ताह के अन्दर फांसी की सजा सुनाकर एक इतिहास रच दिया। इस केस में पुलिस तथा फोरेंसिक प्रयोगशाला ने जिस त्वरितता तथा तत्परता से कार्य किया वह अनुकरणीय है। कोर्ट ने सातों दिन सुनवायी की। यह लचर सुस्ताती न्याय व्यवस्था के समक्ष एक उदाहरण है कि ठान लें तो कोई मुश्किल नहीं है। न्याय वही है जो शीघ्र मिले। व्यवस्था कठोरतम हो, दोषी को कड़ी से कड़ी सजा मिले परन्तु कोई निर्दोष एक दिन भी जेल के पीछे नहीं गुजारे यही व्यवस्था आदर्श है। मुश्किल अवश्य है परन्तु निश्चय दृढ़ हो तो असंभव नहीं है।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

स्वामी दयानन्द सरस्वती व आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वानों के चित्रों को देखकर स्मरण आता है कि ऋषिवर ने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व के द्वारा सम्पूर्ण जगत् को अमूल्य देन दी है। नवलखा महल के संचालक, व्यवस्थापक, अधिकारी व कर्मचारी बधाई व प्रशंसा के पात्र हैं कि ऋषिवर के जीवन के चित्रों के साथ सत्य घटनाओं का वर्णन करके आने वाली पीढ़ी के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य किया है। अगर ऐसे ही आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया गया तो वो दिन दूर नहीं जब 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न साकार होगा।

– डॉ. जितेन्द्र आर्य, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा

महर्षि दयानन्द जी के बारे में पूरी जानकारी हुई। कितना अद्भुत व्यक्तित्व था उनका। मैं मुकेश गर्ग निवासी जयपुर यहाँ आकर बहुत प्रभावित हूँ। यह चित्रदीर्घा क्रमवार हिन्दू धर्म की पूरी वास्तविक जानकारी देती है जिसे जानकर बहुत आनन्द की अनुभूति हुई। न्यास एवं संचालक मण्डल को भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए कोटि-कोटि नमन।

– मुकेश गर्ग, जयपुर

महर्षि का वेदभाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित 'यजुर्वेद सन्देश' पुस्तिका से उद्धृत किया है। डॉ. साहब आर्य जगत् के एक उच्च कोटि के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् हैं। सभी आर्यजन इनको श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉ. साहब मेरे परिवार से विशेष रूप से जुड़े हुए हैं। मेरे परिवार वालों ने मेरे स्व. पिता गोविन्द राम आर्य, प्रधान जी की पुण्य स्मृति में 'आदर्श आर्य प्रवर' शीर्षक की पुस्तक छपवाई थी। उसका सम्पादन डॉ. साहब ने ही किया था जिसकी सभी लोगों ने प्रशंसा की थी। इसी पुस्तक के उद्घाटन के समय डॉ. साहब मेरे गाँव देवराला (हरियाणा) भी गए थे। मेरे परिवार के सभी लोगों से इनका मधुर सम्बन्ध है।

इनकी पुस्तक 'यजुर्वेद संदेश' को पढ़ने से इनकी प्रकाण्ड विद्वता का परिचय मिलता है। इस पुस्तक को पढ़ने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि देव दयानन्द का वेदभाष्य अन्य भाष्यकारों से कहीं अधिक सार्थक है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। पहले के भाष्यकार वेदों को हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्मकाण्ड के ही ग्रन्थ मानते थे परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कहीं पर भी हिंसा नहीं है और न ही इनमें इतिहास है और वेद केवल कर्मकाण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्यविद्याओं के ग्रन्थ हैं। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानवमात्र का बड़ा उपकार किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो यह लेख लिखा है मैं आशा करता हूँ कि सुधि पाठकगण इसे पढ़कर वेदों के सही स्वरूप को समझ पायेंगे, यही मेरी उपलब्धि होगी।

१. मध्यकालीन वेद भाष्यकार- मध्यकाल में वेद भाष्यकार हुए हैं जिन्होंने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाष्य किया है। विक्रम संवत् ६८७ में स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के ४-५ सूक्तों का अधियाज्ञिक (कर्मकाण्ड परक) वेद भाष्य किया। स्कन्द स्वामी के समय ही उद्गीथ हुए हैं। उन्होंने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पाँचवें सूक्त के चौथे मंत्र से ८६ सूक्त के ६ मंत्र तक वेदभाष्य किया। यह भाष्य भी कर्मकाण्ड परक ही है। विक्रम संवत् की १२वीं शताब्दी में वेंकटमाधव ने ऋग्वेद का आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत् की १३वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्तों (ऋग्वेद के पहले मण्डल के १६४ सूक्त) का आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार भाष्य किया। आनन्द तीर्थ ने विक्रम संवत् (१२५५-१३३५) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणाचार्य (विक्रम संवत् १३७२-१४४२) ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का बालखिल्य सूक्तों को छोड़कर आधियाज्ञिक प्रक्रियापरक भाष्य किया। कहीं-कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी किये हैं।

उव्वट (विक्रम संवत् ११००) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्मकाण्डपरक भाष्य है। महीधर (विक्रम संवत् १६४५) ने भी यजुर्वेद का भाष्य याज्ञिक प्रक्रियानुसार किया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मंत्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा। गोमेध, अश्वमेधादि शब्दादि का अनर्थ करके पशु-हिंसा जैसे जघन्य कृत्य को यजुर्वेद-मंत्रों द्वारा प्रतिपदित किया। यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का भाष्य भट्ट भास्कर ने विक्रम संवत् ११०० में किया तथा इसी शाखा का सायण ने भी भाष्य किया।

सामवेद का भाष्य भरत स्वामी ने विक्रम संवत् १३६० के लगभग किया, कर्मकाण्ड परक अर्थों के साथ-साथ कहीं-कहीं आध्यात्म परक अर्थ भी किये। माधव जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुए उन्होंने भी सामवेद का भाष्य किया। अधियाज्ञिक प्रक्रिया के अतिरिक्त कुछ मंत्रों का आध्यात्मिक अर्थ भी किया। अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाण भी उद्धृत किये। भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया।

अथर्ववेद का मध्यकालीन आचार्यों में केवल सायण ने ही भाष्य किया। इसमें भी उन्होंने मंत्र-तंत्र, जादू-टोना कृत्य, अभिचार (हिंसा) आदि कृत्यों का वर्णन करते हुए भाष्य किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्मकाण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशु-हिंसा,

मांस-भक्षण, जादू-टोना, मारण-उच्चाटन, अग्नि-इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित

सुख-ऐश्वर्यों का भोगना, यज्ञ की हवि का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृश्य रूप में यज्ञस्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के पश्चात् यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचारधाराओं को वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया। जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल कुछ व्यक्ति विशेष (ब्राह्मणों) के लिए ही हैं जो याज्ञिक कर्मकाण्ड कराते हैं। इस प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिए ही उपयोगी हैं, यह प्रसिद्ध कर दिया गया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद में रुचि हट गई। वेद कथा, वेद प्रवचन, वेद प्रचारादि के स्थान पर भागवतगीता, उपनिषद् और सत्यनारायण आदि की कथा तथा प्रवचनादि प्रचलित हो गए।

पाश्चात्य विद्वान्- आधुनिक युग (१८ वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् १८५० में डॉ. एच.एच. विल्सन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद किया तथा वेद की संहिताओं के एवं सायण भाष्य के सम्पादन का भी परिश्रम साध्य कार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान् ग्रासमान ने सन् १८७६-१८७७ में किया। इसी प्रकार जर्मन विद्वान् ए. लुडविंग, एच.ओल्डनवर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर.टी.एच. ग्रेफिश ने (सन् १८८१-१८९८) चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया। लांल्वा नामक फ्रांसीसी विद्वान् ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ. कीथ ने तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी अनुवाद किया। थियोडोर बेन्फे ने (सन् १८४८ में) सामवेद.... तथा अथर्ववेद (पैपलाद शाखा) का ब्लूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् १९०१ में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेशों में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों से बहुत कार्य हुआ।

महर्षि दयानन्द- महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में, वेदों का प्रचार-प्रसार करना, ईश्वर, धर्म और वेदों के नाम पर, प्रचलित पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डन, शंका समाधान करना, शास्त्रार्थ करना, स्वार्थी लोगों द्वारा उपस्थित विघ्न-बाधाओं को सहन करना, दिन-रात प्रचार यात्रा करना, छोटे-बड़े ४३ ग्रन्थों को लिखना, अपने आप में एक अद्भुत कार्य उन्होंने किया। स्वार्थी और मूर्ख व्यक्तियों ने उन पर ईंट पत्थर फेंके, खाने में विष मिलाया, देव दयानन्द अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए और गुरु को दिया हुआ वचन उन्होंने आजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए अनर्थ भी किए। उव्वट और महीधर ने गोमेध, अश्वमेध, नरमेधादि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठे अध्याय के ७ से २२ वें मंत्र तक पशु का बांधना, देवता के लिए उसका वध करना, आहुति देना आदि का भयानक चित्रण किया है साथ ही यह भी प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिए की गई हिंसा, हिंसा नहीं होती। ऐसा कुकृत्य वेदों के साथ किया गया जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख हो गए। महर्षि दयानन्द ने वेदों की रक्षा करने का उपदेश दिया। गौ को अघ्न्या अर्थात् हिंसा के अयोग्य बताया और गोमेध का अर्थ गाय की हिंसा नहीं अपितु इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना है। अश्वमेध का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शव के अन्त्येष्टि संस्कार को नरमेध बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु-हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्भुत कार्य महर्षि ने अपने वेद भाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सत्य विद्याओं का पुस्तक बतलाकर वेदों के महत्व को बढ़ाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा।

इस लेख को पढ़कर सुधि पाठकगण यह समझ गए होंगे कि मध्यकालीन वेद भाष्यकर्त्ताओं ने वेदों के अर्थ का अनर्थ करके वेदों में हिंसा तथा अनर्गल बातें बताकर वेदों को कितना बदनाम किया है, जिससे आम व्यक्ति वेदों में विश्वास व श्रद्धा न रखकर उससे विमुख हो गए थे। देव दयानन्द ने वेदों के मंत्रों का सही अर्थ लगाकर वेदों के प्रति लोगों में श्रद्धा उत्पन्न करके मानव मात्र का बड़ा हित व कल्याण किया है। ऐसे देव दयानन्द को 'खुशहाल' नमन होकर श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

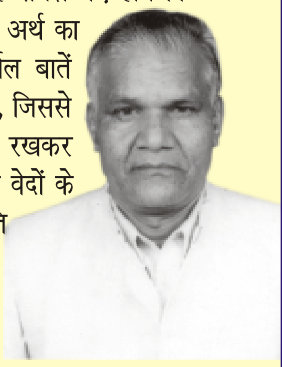

- खुशहाल चन्द आर्य
गोविन्दराम एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गाँधी रोड, दोतल्ला
कोलकाता- ७००००७

ओ३म् की विश्व व्यापकता

(ओ३म्) यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय हुआ है, इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे अकार से विराट्, अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि, मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर ही के हैं।

– सत्यार्थ प्रकाश प्रथम समुल्लास

यजुर्वेद अध्याय ४० मंत्र ७ में **'ओ३म् खं ब्रह्म'**, छान्दोग्य उपनिषद् में **'ओमित्येतद्क्षरमुद्गीथमुपासीत'**, माण्डूक्योपनिषद् में **'ओमित्येदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानम्'** और इसी तरह कठोपनिषद्, कैवल्य उपनिषत्, मनुस्मृति और चारों वेद संहिताओं में ओङ्कारादि नामों से परमात्मा का ग्रहण होता है। वेद में वाग्ब्रह्म ओङ्कार या प्रणव से सम्बोधित हुआ है और इसका दृश्य रूप ओं (ॐ) अक्षर से दिखाया गया है। गायत्री मंत्र में ओम् (ॐ के स्वरूप में ब्रह्म की ही प्रार्थना है)। गायत्री छन्द में विरचित होने पर भी इस मंत्र को सावित्री मंत्र कहा गया है, क्योंकि इस मंत्र का अधिपति 'ओ३म् का दृश्यरूप ॐ चिह्न है।' इस का निर्माण सविता (सूर्य) के प्रचण्डरूप से भासमान रक्ताभमण्डल से हुआ है।

पाणिनी ने अपनी शिक्षा में वाग्यंत्र के कंठविवर, मुखविवर और नासिकाविवर के तीन घटकों को वक्त्र कहा है। मानव शरीर में वायु के रूप में प्राण कार्यरत रहता है। वह वायु वक्त्र में प्रविष्ट होकर नाद का निर्माण करता है। अ, उ और म् इन तीन अक्षरों के मेल से 'ओ३म्' शब्द बनता है। वायु रूप प्राण के माध्यम से निर्मित होने के कारण इसे पवित्र शब्द प्रणव भी कहा जाता है। रघुवंश १/११, मनुस्मृति २/७४, कुमारसंभव २/१२, और भगवद्गीता ७/८ में प्रणव अक्षर 'ओम्' के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। यह अक्षर 'ओम्' का ही दृश्य रूप है।

भारतीय भाषाओं ब्राह्मी देवनागरी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर में ऊपर की ओर या पार्श्व में जुड़ी शिरोरेखा अकार की द्योतक है। उसके बिना किसी भी अक्षर का स्वतन्त्र उच्चारण सम्भव नहीं है। भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि **'अक्षराणामकारोऽस्मि'** अर्थात् अक्षरों से संयुक्त अकार मैं ही हूँ। वेदादि ज्ञान-विज्ञान की समस्त लिपियों या वाणियों की निर्मिति इसी तरह हुई है। यही कारण है कि प्रणवाक्षर 'ओम्' को अक्षरगणों के अधिपति मानकर वेदों में ब्रह्मणस्पति और गणपति कहा गया है।

ओम् बुद्धिवर्धक ज्ञान के देवता हैं। ॐ इसी ओम् का दृश्य रूप है। गायत्री मंत्र में ऊपर इस बात को स्पष्ट किया गया है। लिखित वाणी या माध्यम का मूल उपर्युक्त सावित्री मंत्र (गायत्री मंत्र) **'ओं तत्सुवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमही। धियो यो नः प्रचोदयात्'** है। ओं (ॐ) सवितुर्देवस्य वरेण्य भर्ग-ओ३म् रूपी सविता देवता का यह श्रेष्ठतम तेज है। श्रेष्ठतम इसलिए है- क्योंकि सविता की इन रश्मियों का तेज मनुष्य के मस्तिष्क में पहुँच जाता है। अतः कहा गया है कि **'तत् देवस्य धीमहि'** अर्थात् उस देव का ध्यान करें। ॐ चिह्न के अंगों अ, उ, म् से बनी वर्णमाला के अक्षरों का तल्लीन होकर अध्ययन करें। अन्त में **'धियो यो नः प्रचोदयात्'** कहा गया है- अर्थात् वह हमारी प्रज्ञाशक्ति को प्रेरणा देवे। इस मंत्र को वैदिक युग में विद्यार्थी को गुरु के समीप विद्यारम्भ से पूर्व उपनयन संस्कार के समय सिखाया जाता था।

गायत्री मंत्र के तीन चरणों में ८-८ के हिसाब से २४ अक्षर होना चाहिए, पर पहले चरण में ८ के स्थान पर ७ ही अक्षर हैं अतः कुल अक्षर २४ न होकर २३ ही रह जाते हैं। एक प्रणवाक्षर (ॐ) और मिलाने पर प्रथम चरण में ८ अक्षर होकर तीनों चरणों में २४ की संख्या पूरी हो जाती है। अतः मंत्र के प्रारम्भ में 'ॐ' को इसी का अंगभूत मानकर इसका उच्चारण किया जाता है।

सभी संहिताओं की सुरक्षा और उसकी स्थल कालातीत

अस्तित्व की आधारभूत वर्णमाला और उसका मूलाधार भूत सविता मण्डल के अंगों से बना हुआ है- जो ओम् का रूप है। गायत्री मंत्र का 'भर्ग' वही है जिसे वर्णमाला में भी प्रथम स्थान दिया गया है।

गणेश चौथ के पर्व पर अक्षर ज्ञान के लिए बालक के हाथ में स्लेट पट्टिका और बरतणा पकड़ाया जाता था। बुद्धि के देवता गणेश या गणपति को वेदव्यास ने लेखक के रूप में नियुक्त कर महाभारत जैसे विशाल ऐतिहासिक महाकाव्य की रचना की थी। अतः आज तक भी कवि या ग्रन्थकर्त्ता ग्रन्थ लेखन के प्रारम्भिक श्लोक या छन्द में गणेश को प्रणाम कर आशीर्वाद लेता आया है। यह गणेश या गणपति सविता मण्डल या प्रणव का ही स्वरूप है। रुद्राष्टाध्यायी में 'ॐ' को गणपति का विशेषण देते हुए उनका आह्वान बुद्धि को प्रेरणा देने हेतु किया गया है। गणपति को गणों के मध्य गणों का स्वामी, प्रियों के मध्यम में अति प्रिय, निधि के रूप में निधियों का पति (स्वामी) अर्थात् विद्या आदि पदार्थों का अधिपति या पालनहार कहते हुए उन्हें स्वीकार करना कहा गया है। गणपति 'प्रणव' या 'ओम्' का इस प्रकार समस्त प्राणियों में निवसित, समस्त विश्व (प्रकृति) को स्वयं में गर्भ के समान धारण करने वाला कहा है।

पंडित रघुनन्दन शर्मा ने भी स्वरचित 'वैदिक सम्पत्ति' पुस्तक के पृष्ठ ४५२ पर बुद्धि के देवता गणपति को 'ॐ' का ही रूप स्वीकार किया है। गणेश पुराण के श्लोक उद्धृत करते हुए वे लिखते हैं-

ॐकार रूपी भगवान यो वेदादौ प्रतिष्ठित: l
यं सदा मुनयो देवा स्मरन्तीन्द्रादयो हृदि: ll
ओंकार रूपी भगवानुवतस्तु गणनायक: l
यथा सर्वेषु कर्मषु पूज्यन्ते सो विनायक: ll

अर्थात् गणपति ॐ का ही रूप है। इसलिए सभी कर्मों के आदि में उनकी पूजा होती है।

भारत के समान मैक्सिको (अमेरिका) में भी गणेश की आकृति इसी 'ॐ' के चिह्न से बनाई गयी थी। पर दोनों ही देशों में 'ॐ' को गजानन रूप देकर इसकी दुर्गति की गई है। दोनों ही देशों में ॐकार रूप गजानन का एक समान ही रूप पाया जाता है। इनकी उत्पत्ति (या रूप परिवर्तन) 'ॐ' के चिह्न से ही हुई है। शीघ्र लेखन के कारण 'ॐ' का यह मूर्ति रूप गजानन बन गया है। यथा ॐ→ॐ→ॐ→ॐ

भारतीय शिलाभिलेखों में गिलगित से कनार्टक तक इसके रूप ७,७, ३ ,၈ या ७ प्रयुक्त किए गए हैं। देवनागरी के लेखों अभिलेखों में यह ।।၆०।। के रूप में लिखा मिलता है।

जैन परम्परा में 'ॐ' के उक्त स्वरूप को 'भले मींड्' कहा गया है जो भद्रबिन्दु का अपभ्रंश है। इस चिह्न को जैनियों ने अनेक रूपों में व्याख्यायित किया है। जापान में होर्युजी विहार में ताड़पत्र पर लिखी हुई उष्णीष विजयधारणी नामक हस्तलिपि जो महाबोधिधर्म ५२० ई. में भारत से चीन ले गया था ७०१ ई में जापान पहुँची ग्रन्थारम्भ में प्रयुक्त 'ॐ' का रूप ७ मिलता है। जापान में ही सिद्धम की 'शू जी शू' शीर्षक प्रसिद्ध पुस्तक में बोजेन नाम के विद्वान् द्वारा बनाया गया मानवाकृति में आलंकृत 'ॐ' रूप मिलता है। इसकी आकृति विचित्र है। सवाई मानसिंह (द्वितीय) संग्रहालय, जयपुर में 'सुबुद्धि की पोथी' में ओम् की यह आकृति ॐ के रूप में लिखी गई है।

कुरान शरीफ और बाइबिल में ओ३म् के रूप में अलिफलाम मीम और AIM के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। कुरान में आयत 'अलिफलाम मीम जालिकल किताबो लादिन फिही दुदनालिल मुत्तकीना' लिखते हुए कहा गया है कि इसमें 'अलिफलाम मीम' अक्षर ओ३म् के लिए प्रयुक्त किये गए हैं। लाम जब हर्फ तहज्जी से मिलता है तब 'वाउ٣' बन जाता है। उदाहरण के रूप में निजामुद्दीन को निजाम उल्दीन के रूप में लिखना कहा गया है। इसमें लाममीम से मिलकर 'वाउ٣' बन गया है। अतः इस ٣٣। को स्वरूप कुरान में आलिम लाममीम ٣٣। लिखा जाता है। ये अक्षर ओ३म् के लिए ही प्रयुक्त हुए हैं। इसी प्रकार अरबी भाषा का आमीन शब्द भी ओम् का वाचक कहा गया है।

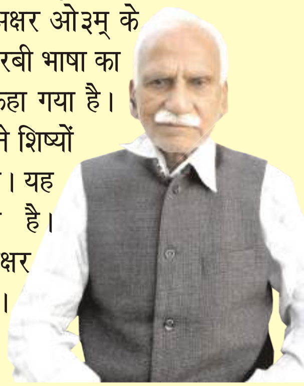

बाइबिल में ईसा मसीह के द्वारा अपने शिष्यों को AIM से मिलाना कहा गया है। यह AIM ओम् ही हो सकता है। A=अ+I=उ+M=म् ये तीन अक्षर 'ओ३म्' के लिए ही प्रयुक्त हुए हैं। अतः स्पष्ट है कि ओ३म् को समस्त विश्व में धार्मिक ध्वनि के रूप में स्वीकार किया गया है।

- डॉ. ब्रजमोहन जावलिया
१०१, भटियाणी चौहट्टा
उदयपुर-३१३००१

सदा करे संघर्ष जो,
सबको गले लगाता है।
मिलता उसे ही सबका स्नेह,
मंजिल अपनी पाता है।।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

बच्चों का व्यवहार ठीक करने से पहले बड़े अपना व्यवहार ठीक करें

घर में सबसे छोटा सदस्य है मेरा सवा-डेढ़ साल का पौत्र। वो मौका लगते ही झाड़ू उठा लाता है और लगता है फर्श पर झाड़ू लगाने की कोशिश करने। कभी वाइपर उठा लाता है और उसे चलाने लगता है। कोई भी कपड़ा मिल जाए उसे उठाकर पानी की बाल्टी में या जहाँ कहीं भी पानी मिले उसमें डुबोकर गीला कर लेता है और कभी फर्श पर पौंछा लगाने लगता है तो कभी मेज साफ करने लगता है। गाड़ी में अगली सीट पर बैठता है तो कभी रेडियो का वॉल्यूम बढ़ा देता है तो कभी एसी का। कभी वाइपर का लीवर घुमा देता है तो कभी गियर रॉड खींचने का प्रयास करता है। वो ऐसा क्यों करता है? वो ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वो हम सबको ऐसा करते हुए देखता है और उसे खुद करने की कोशिश करता है। यह अत्यन्त स्वाभाविक है। बच्चा खाली या शान्त नहीं बैठ सकता। उसे कुछ न कुछ खेल करना ही है। घर के सदस्यों के काम और दूसरे क्रियाकलापों की नकल करने से अच्छा खेल उसके लिए और कोई हो ही नहीं सकता।

प्रश्न उठता है कि क्या बच्चे के खेलने के लिए उसके पास खिलौने नहीं हैं जो वो घर की दूसरी चीजों से खेलने की कोशिश करता है? हैं, पर्याप्त हैं लेकिन वास्तविकता ये है कि यदि उसके चारों ओर बहुत सारी चीजें रखी हों तो वो उन सबसे भी खेलेगा। अपने आसपास की सभी चीजें उसे आकर्षित करती हैं। घर के सदस्य जिन चीजों का प्रयोग करते हैं और जैसे करते हैं वो भी उन सभी चीजों का उन्हीं की तरह या अपने तरीके से प्रयोग करना चाहता है। यही उसका खेल है। बच्चा खिलौनों से भी प्रायः तभी खेलता है जब दूसरे लोग उनसे खेलना शुरू करते हैं। वास्तविकता ये भी है कि लोग अपने बच्चों के लिए जो खिलौने खरीदते हैं वो बच्चों की पसन्द के नहीं अपनी पसन्द के खरीदते हैं। वो खिलौने लाते हैं और बच्चे को बतलाते हैं कि ऐसे खेलो। लोग प्रायः खाने-पीने की चीजें भी बच्चों की पसन्द के बजाय अपनी पसन्द की ही लाते हैं। हम बच्चों से अपनी बात मनवाने या अपनी पसन्द उस पर थोपने का प्रयास करते ही रहते हैं।

बच्चा जब बड़ों की पसन्द के खिलौनों से खेलेगा, उनकी पसन्द की चीजें खाएगा तो ये भी स्वाभाविक ही है कि उनकी पसन्द या जरूरत के दूसरे काम भी उनकी तरह ही करने की कोशिश करेगा क्योंकि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यही तो हम

उसे सिखा रहे होते हैं। और यदि ऐसा करने से उसे रोकेंगे तो मचलने लगेगा। रोएगा। रूठेगा। उसका ये व्यवहार बड़ों से प्रश्न करना ही है कि जब आप सब लोग ये सब कर रहे हो तो मेरे करने में क्या बुराई है? उसका व्यवहार बिल्कुल ठीक है। यदि आप अपने सामने नहीं करने देंगे तो वो आँख बचाकर या पीछे से करेगा। तो नन्हे बच्चों को रोकने की बजाय वो जो करें करने दीजिए। बस उनकी सुरक्षा का ध्यान रखिए। उन्हें सर्दी-गर्मी, आग-पानी व गन्दगी से बचाने का प्रयास करते रहिए। जो चीजें उनके लिए खतरनाक या कोई दुर्घटना पैदा करने वाली हो सकती हों उनकी पहुँच से दूर कर दीजिए। खतरनाक रसायन व दवाएँ उनकी पहुँच से बहुत ऊपर रखिए।

यदि बच्चा इधर-उधर से कोई गलत चीज उठाकर मुँह में डालता है तो उसे रोकना जरूरी है। इसके लिए उसका पेट भरा होना भी जरूरी है। उसे सही समय पर उचित आहार दीजिए लेकिन खाने-पीने के मामले में भी बच्चे कम परेशान नहीं करते। अधिकांश बच्चे प्रायः दूध पीने या खाने से बचने की कोशिश करते हैं और जब घर के दूसरे या बड़े सदस्य भोजन करते हैं तो उनके भोजन में से उठाकर खाने का प्रयास करते हैं। ये तो बड़ी अच्छी बात है। इस बात का लाभ उठाना चाहिए। जब घर के बड़े सदस्य कुछ भी खाने के लिए बैठें तो

ऐसा भोजन लेकर बैठें जो बच्चों के लिए भी अनुकूल हो। खुद भी खाएँ और बच्चों को भी खिलाएँ। जिन घरों में तीसरी या चौथी पीढ़ी के बुजुर्ग जैसे दादा-दादी, नाना-नानी या परदादा-परदादी आदि होते हैं बच्चों के लिए हर तरह से बड़ा ठीक रहता है। बुजुर्ग प्रायः दलिया-खिचड़ी आदि लेते हैं तो बच्चा भी उनके साथ ये सब खाद्य पदार्थ ले लेता है जो उसके लिए ठीक रहते हैं।

इसके बाद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है शिष्टाचार व नैतिकता के विकास का। अनुकरण अथवा नकल का हम सबके जीवन में बहुत महत्त्व है। नकल के बिना हम सीख ही नहीं सकते लेकिन गलत चीजों की नकल करना घातक है। बच्चा भी अनुकरण से ही सीखता है। वह बड़ों का ही अनुकरण करता है। अपने अंदाज में वो बड़ों की ही भाषा बोलता है और बड़ों की तरह ही बोलता है। हम शिष्टाचार का यथेष्ट पालन न करें और बच्चों को समझाएँ कि वो शिष्टाचार का पालन करें तो ये सम्भव नहीं। बच्चों को शिष्ट बनाना है तो माता-पिता को शिष्ट बनना होगा। हम घर में एक दूसरे से व मेहमानों या अन्य आगंतुकों से जैसा व्यवहार करते हैं अथवा जैसी भाषा बोलते हैं बच्चा भी उसी का अनुकरण करेगा। अभिवादन भी उन्हीं की तरह करेगा। लहजा उसका अपना होता है लेकिन भाव बड़ों का ही आ जाता है। माता-पिता व घर के अन्य सदस्यों में जैसी आदतें होती हैं बच्चा बड़ी सूक्ष्मता से न केवल उनका निरीक्षण करता रहता है अपितु उनकी नकल भी करता रहता है।

यदि बच्चों में सचमुच अच्छी आदतें डालनी हैं और उन्हें सुसंस्कृत बनाना है तो माता-पिता को भी स्वयं में अच्छी आदतें डालनी होंगी और सुसंस्कृत बनना होगा। बच्चा जब

हमारे व्यवहार अथवा व्यक्तित्व में कमी अथवा दोगलापन पाता है तो वह विचलित हो जाता है। हमारी कथनी व करनी का अन्तर या किसी के सामने व उसकी पीठ पीछे उसके प्रति व्यवहार या आचरण में अन्तर बच्चे पर सबसे ज्यादा बुरा प्रभाव डालता है। वह समझ ही नहीं पाता कि कथनी ठीक थी या करनी ठीक है। उसे पता नहीं चल पाता कि किसी के सामने उसके बारे में कही गई बात ठीक थी या उसके जाने के बाद पहली बात के विपरीत कही गई बात उचित है। उसकी प्रशंसा या चापलूसी ठीक थी या उसकी आलोचना ठीक है। बच्चे के सम्पूर्ण आचरण व उसके नैतिक चरित्र के विकास में इन बातों का बड़ा प्रभाव पड़ता है। हम बात-बात पर गुस्सा करते हैं या झूठ बोलते हैं तो बच्चा भी ऐसा ही करेगा। हमारे व्यवहार अथवा आचरण में दोगलापन है तो बच्चे के व्यवहार व आचरण में भी वह जल्दी ही आ जाएगा।

प्रायः ऐसा होता है कि माता-पिता या घर के अन्य सदस्यों में कुछ कमियाँ होती हैं। यह स्वाभाविक है लेकिन कोई माता-पिता या घर का अन्य सदस्य ये नहीं चाहता कि उनके बच्चों में भी ये कमियाँ आएँ। वो बच्चों को उन कमियों से बचाने के लिए पूरा जोर लगा देते हैं। यहाँ स्वयं को ठीक करने की बजाय बच्चों को ठीक करने पर जोर होता है। इसके लिए समझाने से लेकर डाँटने-डपटने व मारने-पीटने तक सभी तरीके आजमाए जाते हैं लेकिन बच्चों पर इसका सकारात्मक नहीं नकारात्मक प्रभाव ही पड़ता है। बच्चों को जिन बातों के लिए जोर देकर रोकने का प्रयास किया जाता है बच्चे उन्हीं के बारे में सोचते रहते हैं और जो हमारी सोच होती है वही अंततोगत्वा हमारे जीवन की वास्तविकता में परिवर्तित हो जाती है। बच्चे भी इस प्रभाव से अछूते नहीं रहते।

गुण हों या अवगुण ऊपर से नीचे की ओर संक्रमित होते हैं। आपने सुना ही होगा कि जैसा बाप वैसा बेटा। जैसा राजा वैसी प्रजा। जहाँ राजा अथवा जनप्रतिनिधि अपने कर्त्तव्य का ठीक से पालन नहीं करता वहाँ प्रजा का भी अपने कर्त्तव्य पालन में शिथिल हो जाना अस्वाभाविक नहीं। राजनीति का स्तर गिरने का ही ये परिणाम है कि जनता में नैतिकता का निरन्तर ह्रास हो रहा है और भ्रष्टाचार लगातार बढ़ता ही जा रहा है। कोई तो हो जो ऊपर से वास्तव में एक अच्छी शुरूआत करे। नेताओं की करनी और कथनी के अन्तर ने सुधार की संभावनाओं को निर्मूल कर डाला है। मात्र चीख-चीखकर लच्छेदार भाषण देने से नैतिकता का विकास असम्भव है। प्रवचन अथवा नैतिक शिक्षा की किताबें छलावे अथवा व्यापार के अतिरिक्त कुछ नहीं। बच्चे ही नहीं हम सब भी अपने परिवेश से ही ज्यादा सीखते हैं अतः परिवेश को सुधारना अनिवार्य है। यदि हम वास्तव में चाहते हैं कि हमारे बच्चों में अच्छी आदतों व सही नैतिक मूल्यों का विकास हो तो उन सभी आदतों व नैतिक मूल्यों को स्वयं माता-पिता को भी अपने अन्दर विकसित करना होगा। दूसरा कोई उपाय या विकल्प हो ही नहीं सकता।

- सीताराम गुप्ता,
ए डी-१०६-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४
चलभाष- ०९५५५६२२३२३

निमन्त्रण-पत्र

।।ओ३म्।।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

उदयपुर

के तत्त्वावधान में

२१ वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव

दिनांक ६ अक्टूबर से ८ अक्टूबर २०१८

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी, वानप्रस्थ, उपदेशकों, उपदेशिकाओं, भजनोपदेशकों, भजनोपदेशिकाओं के उद्बोधन-श्रवण का अनुपम लाभ।

कृपया ध्यान दें-

१. उदयपुर रमणीक स्थल है। अतएव यह सत्संग लाभ के अतिरिक्त पर्यटन लाभ का भी अभूतपूर्व अवसर है।

२. अक्टूबर में रात्रि में हलकी सर्दी हो सकती है अतः कृपया ओढ़ने के लिए चादर आदि साथ में लावें।

३. **अपने आगमन सम्बन्धी सूचना अग्रिम ही अवश्य भेजें।** ताकि आपके आवास तथा भोजन की सुव्यवस्था हो सके।

४. जो सज्जन होटल जैसी विशिष्ट आवास व्यवस्था चाहते हों वे हमें शीघ्र लिखें ताकि होटलों में उनका आरक्षण कराया जा सके। **यह व्यवस्था सशुल्क होगी।**

सम्पर्क : +919829063110, +919314535379

५. **श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है। अपना छोटा-बड़ा अर्थ-सहयोग अवश्य दें। चैक या ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के नाम से ही भेजें।**

मान्यवर! आपको विदित ही है कि आर्यजनों द्वारा नवलखा महल, उदयपुर, जहाँ महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने साढ़े छः मास विराजकर, लोक कल्याणार्थ सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थरत्न का प्रणयन सम्पूर्ण किया था, जैसे पवित्र ऐतिहासिक स्थल को उस महामना की स्मृति में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक का स्वरूप प्रदान करने का निश्चय किया था, जहाँ से महर्षि दयानन्द की दिव्य विचारधारा का विश्व भर में प्रचार-प्रसार किया जावे।

प्रभु कृपा से व आप सभी के सहयोग से, **यह सत्यार्थ प्रकाश भवन आज दर्शनीय व प्रेरक स्थल के रूप में ख्याति प्राप्त है।** प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में आने वाले दर्शनार्थीगण, **(गत वर्ष ३०००० सहस्र से अधिक)** यहाँ से वैदिक विचारधारा का परिचय प्राप्त कर, प्रेरणा ले रहें हैं।

इसी क्रम में इस प्रेरणा स्थल पर प्रतिवर्ष अक्टूबर माह में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन करने का निश्चय किया गया था ताकि इस ऐतिहासिक अवसर पर हम आर्यजन, एक ऐसे स्थल पर, जहाँ कभी ऋषिवर के चरण पड़े थे; उनकी वाणी ने लोगों के दिलों के तारों को झंकृत किया था, एकत्रित हो, करुणा वरुणामय देव दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सकें तथा विद्वानों के चरणों में बैठ, ऋषि मिशन के अग्र-प्रसारण का संकल्प ले सकें।

आयें, हम जीवन-व्रत लें, मानस बनावें, सहयोग प्रारम्भ करें, ताकि माँ वसुन्धरा की गोद को गौरवान्वित करने वाले, सम्पूर्ण मानवता के हितैषी, उस विषयायी देवता की स्मृति में इस केन्द्र को इतना दर्शनीय और सशक्त बनावें कि एक बार पुनः यहाँ से विश्व वैदिक संस्कृति का पाठ पढ़ सके।

२१वें सत्यार्थप्रकाश महोत्सव में सपरिवार इष्टमित्रों सहित अधिकाधिक संख्या में अवश्य पधारें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल अध्यक्ष	**स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती** न्यासी	**अशोक आर्य** कार्यकारी अध्यक्ष
डॉ. अमृतलाल तापड़िया संयुक्त मंत्री एवं संयोजक	**भवानीदास आर्य** मंत्री	**विजय शर्मा** उपाध्यक्ष
नारायण मित्तल कोषाध्यक्ष	**श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल** न्यासी	**श्रीमती शारदा गुप्ता** महिला संयोजिका

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४२३५१०१, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org,
E-mail : satyarthnyas1@gmail.com

– महोत्सव की विशेष शोभा –

माननीय गंगाप्रसाद जी गुप्त, महामहिम राज्यपाल; मेघालय
माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह जी, केन्द्रीय मानव संसाधन राज्य मंत्री; दिल्ली
माननीय न्यायमूर्ति श्री एस. एस. कोठारी; लोकायुक्त जयपुर (राज.)

विनती है करबद्ध यह आवें, सब श्रीमन्त।
सत्यार्थ-सूर्य प्रखर हो, तम का होवे अन्त।।

12315	ANANYA EXP.	SDAH	UDZ	SAT	*Arr.	02:45
12316	ANANYA EXP.	UDZ	SDAH	MON	**Dep.	00:20
19602	NJP UDZ EXP.	NJP	UDZ	WED	Arr.	03:55
19601	UDZ NJP EXP.	UDZ	NJP	SAT	Dep.	00:20
19665	KHA. EXP.	KHJ	UDZ	DAILY	Arr.	06:35
19666	KHA. EXP.	UDZ	KHJ	DAILY	Dep.	22:20
12963	MEWAR EXP.	NZM	UDZ	DAILY	Arr.	07:15
12964	MEWAR KXP.	UDZ	NZM	DAILY	Dep.	18:15
12992	INTERCITY	JP	UDZ	DAILY	Arr.	21:30
12991	INTERCITY	UDZ	JP	DAILY	Dep.	06:00
12981	CHETAK EXP.	DEE	UDZ	DAILY	Arr.	07:50
12982	CHETAK EXP.	UDZ	DEE	DAILY	Dep.	17:15
59605	LOCAL	COR	UDZ	DAILY	Arr.	08:35
59606	LOCAL	UDZ	COR	DAILY	Dep.	19:30
12995	BANDRA EXP.	BDTS	UDZ	1,4,6	Arr.	08:55
12996	BANDRA EXP.	UDZ	BDTS	2,4,6	Dep.	21:00
19659	SHALIMAR EXP.	SHM	UDZ	SUN	Arr.	08:22
19660	SHALIMAR EXP.	UDZ	SHM	FRI	Dep.	20:00
59603	LOCAL	AII	UDZ	DAILY	Arr.	17:10
59604	LOCAL	UDZ	AII	DAILY	Dep.	09:30
59835	LOCAL	NMH	UDZ	DAILY	Arr.	11:40
59836	LOCAL	UDZ	NMH	DAILY	Dep.	14:15
22901	RAJA RANI EXP.	BDTS	UDZ	3,5,7	Arr.	16:20
22902	RAJA RANI EXP.	UDZ	BDTS	3,5,7	Dep.	21:00
19329	INDORE EXP.	IND	UDZ	DAILY	Arr.	19:15
19330	INDORE EXP.	UDZ	IND	DAILY	Dep.	20:35
09721	SPECIAL EXP.	JP	UDZ	DAILY	Arr.	13:30
09722	SPECIAL EXP.	UDZ	JP	DAILY	Dep.	15:05
19327	RTM UDZ EXP.	RTM	UDZ	DAILY	Arr.	23:50
19328	UDZ RTM EXP.	UDZ	RTM	DAILY	Dep.	01:15
19610	UDZ HW EXP.	HW	UDZ	1,3,6	Arr.	16:50
19609	HW UDZ EXP.	UDZ	HW	2,5,7	Dep.	13:05
59605	UDZ COR PASS.	COR	UDZ	DAILY	Arr.	08:35
59606	COR UDZ PASS.	UDZ	COR	DAILY	Dep.	19:30
22986	RAJ. HUM.	DEE	UDZ	SUN	Arr.	04:55
22985	RAJ. HUM.	UDZ	DEE	SAT	Dep.	23:10

*Arr.- Arrival **Dep.- Departure

शीघ्र आगमन सम्भव है।
यदि उड़कर आवें आप।।

UDAIPUR TO NEW DELHI		
9W 838	Jet Airways	13:55
6E 2315	Indigo	14:10
A1 472	Air India	15:05
6E 2299	Indigo	19:15
NEW DELHI TO UDAIPUR		
SG 8913	Spice Jet	06:20
6E 2746	Indigo	07:50
9W 837	Jet Airways	12:05
A1 471	Air India	13:20
6E 2554	Indigo	13:25
9W 745	Jet Airways	19:05
UDAIPUR TO JAIPUR		
AI 9686	Air India	08:30
SG 8637	Spice Jet	09:00
6E 437	Indigo	17:35
JAIPUR TO UDAIPUR		
AI 9685	Air India	06:50
SG 8623	Spice Jet	07:25
6E 442	Indigo	16:10
UDAIPUR TO BOMBAY		
SG 636	Spice Jet	05:30
9W 328	Jet Airways	06:55
6E 748	Indigo	10:00
6E 753	Indigo	15:15
AI 644	Air India	16:40
9W 974	Jet Airways	19:30
BOMBAY TO UDAIPUR		
9W 327	Jet Airways	05:05
6E 749	Indigo	12:15
AI 643	Air India	14:35
9W 973	Jet Airways	17:10
6E 764	Indigo	17:20

आमन्त्रित संन्यासीवृन्द, आर्य नेतृत्व एवम् विद्वद्जन

सर्वपूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी; दिल्ली, स्वामी सुमेधानन्द जी; (सांसद) सीकर, स्वामी ओम् आनन्द जी; चित्तौडगढ़, स्वामी शारदानन्द जी; आबूरोड, स्वामी आर्यवेश जी; दिल्ली, स्वामी आर्येशानन्द जी; पिण्डवाडा, आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक; भीनमाल, साध्वी उत्तमा यति जी; अजमेर, साध्वी पुष्पा जी सरस्वती; रेवाड़ी, श्री विद्यामित्र ठुकराल; नई दिल्ली, श्री रासासिंह रावत; अजमेर, श्री सुरेश चन्द्र आर्य; अहमदाबाद, श्री विजय सिंह भाटी; जोधपुर, श्री सत्यव्रत सामवेदी; जयपुर, श्री आनन्द कुमार आर्य; टाण्डा, श्री प्रकाश आर्य; महू, श्री विनय आर्य; दिल्ली, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश; जोधपुर, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय; दिल्ली, डॉ. सोमदेव शास्त्री; मुम्बई, आचार्य वेदप्रिय शास्त्री; केलवाड़ा, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री; अमेठी, डॉ. देव शर्मा; दिल्ली, आचार्य जयेन्द्र जी; नोएडा, श्री जीववर्द्धन शास्त्री; बांसवाड़ा, डॉ. गायत्री पंवार; जयपुर, श्री दीनदयाल गुप्त; कोलकाता, श्री विजय शर्मा; भीलवाड़ा, श्री मोती लाल आर्य; आबू रोड़, बाबू मिठाई लाल सिंह; मुम्बई, श्री खुशहाल चन्द आर्य; कोलकाता, श्री जयदेव आर्य; राजकोट, श्री भरत ओमप्रकाश; अहमदाबाद, श्री बी. एल. अग्रवाल; जयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई, डॉ. कैलाश कर्मठ; कोलकाता, श्री अमरसिंह; ब्यावर, श्री केशवदेव शर्मा; सुमेरपुर।

अन्य अनेक गणमान्यजनों/विदुषियों की स्वीकृति आनी बाकी है

१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द का योगदान

१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को तन के गोरे मन के काले अंग्रेज इतिहासकारों ने गदर या विद्रोह का नाम दिया। अंग्रेज इतिहासकारों की इस हरकत से उनकी मानसिकता स्पष्ट हो जाती है परन्तु शायद वर्षों तक गुलाम रहने के कारण गुलामी की मानसिकता में जी रहे आजाद भारतीय हुकमरानों ने भी इसे गदर या विद्रोह ही माना ।

अपने गौरवशाली इतिहास को आने वाली पीढ़ियों के समक्ष रखना जिसे जानकर हमारी वर्तमान पीढ़ी स्वयं को गौरवान्वित महसूस करे और उसी गौरवशाली इतिहास की पृष्ठभूमि में वर्तमान में संघर्ष करते हुए अपने भविष्य को उज्ज्वल एवं सुरक्षित कर सके, आवश्यक है।

वेदों के पुनर्स्थापक एवं आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की भूमिका १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय अत्यन्त महत्वपूर्ण रही। हालांकि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्वलिखित जीवनी इतिहास के इस मोड़ पर आकर मौन धारण कर लेती है। शायद इसका कारण भी स्वतंत्रता संग्राम के समय आवश्यक रूप से अपनाई जाने वाली कूटनीति रही होगी ।

उपलब्ध प्रामाणिक एतिहासिक ग्रन्थों, प्रमाणों, श्रुति परम्पराओं व स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय आदि में व्यक्त विचारों के आधार पर हम बड़ी आसानी से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम १८५७ के समय देव दयानन्द की भूमिका समझ सकते हैं।

१. वर्ष १८५५ में महर्षि दयानन्द हिमालय यात्रा के समय शंकराचार्य द्वारा स्थापित जोशी मठ में गए, जहाँ उन्हें मठ के विद्वान् महन्त ने स्वामी पूर्णानन्द जी से शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा देते हुए उनके नाम एक पत्र दिया। शिक्षा पाने को आतुर दयानन्द गंगा किनारे भ्रमण करते हुए स्वामी पूर्णानन्द जी से मिले। परन्तु स्वामी पूर्णानन्द जी ने अपनी वृद्धावस्था (११० वर्ष से अधिक आयु) का हवाला देते हुए पढ़ाने में असमर्थता जाहिर की और उन्हें मथुरा में अपने शिष्य विरजानन्द दण्डी के पास जाने की प्रेरणा दी। यह घटना १८५५ की है। परन्तु महर्षि दयानन्द दण्डी स्वामी विरजानन्द के पास वर्ष १८६० में पहुँचे। ज्ञान पिपासु, शिक्षा-दीक्षा पाने को आतुर, सच्चे शिव की खोज में निकले स्वामी दयानन्द इन पाँच वर्षों तक मथुरा में गुरु विरजानन्द के पास नहीं पहुँच पाए तो इसका एकमात्र कारण १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उनकी महती भूमिका रही। इन पाँच वर्षों में स्वामी दयानन्द प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की योजना बनाते, प्रेरणा देते तथा जनसाधारण में जागृति कर स्वतंत्रता का मंत्र फूंकते घूमते रहे।

२. महर्षि दयानन्द नाना साहब पेशवा के गुरु थे। नाना साहब को स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा महर्षि दयानन्द ने दी। इतिहासकार तो यह भी लिखते हैं कि नाना साहब ने शस्त्र का आश्रय लेकर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम लड़ा तो यही कार्य उनके प्रेरक महर्षि दयानन्द ने शास्त्र का आश्रय लेकर किया। नाना साहब पर स्वामी दयानन्द के प्रभाव की पुष्टि प्रथम स्वाधीनता संग्राम के उपरान्त तीनों स्वतंत्रता सेनानियों नाना साहब, दुर्जन राव व उनके सेनापति तांत्या टोपे को उपदेश दिया तथा नाना साहब को संन्यास देकर उनका नाम दिव्यानन्द सरस्वती रख दिया, इस तथ्य से होती है।

३. १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय महर्षि दयानन्द स्वतंत्रता सेनानियों व उनके नेताओं के बीच सम्पर्क सूत्र, प्रेरक, योजनाकार के रूप में कार्य करते रहे। उदाहरण के लिए नाना साहब को सुरक्षित रखने के लिए मौरवी के सामन्त के नाम पत्र महर्षि दयानन्द ने ही लिखकर भेजा था। नाना साहब का मौरवी में साधु वेश में निवास तथा देहान्त

प्रसिद्ध है।

४. वर्ष १८५६ में स्वतंत्रता संग्राम की योजना को अन्तिम रूप देने के लिए एक सर्वखाप पंचायत मथुरा के तीर्थगाह पर हुई। जिसमें नाना साहब पेशवा, मौलवी अजीम उल्लाखान, रंगुबाबू आदि कई स्वतंत्रता सेनानियों ने सर्वखाप पंचायत के नुमाइंदों के साथ भाग लिया। इस अपुष्ट ऐतिहासिक पंचायत की पुष्टि मीर मुश्ताक मीरासी के स्वलिखित उर्दू-फारसी लिपि के पत्र से ही होती है।

५. १८५७ के स्वतंत्रता युद्ध में उत्तर और दक्षिण के बीच राजाओं, जागीरदारों व स्वतंत्रता सेनानियों के सम्पर्क सूत्र के रूप में कार्य करने की पुष्टि अंग्रेज सरकार द्वारा नियुक्त मेजर एच. पी. देवरा तथा कैप्टन जे. एल. पीयर्स के कमीशन के सामने सीताराम बाबा की गवाही से भी होती है।

"१८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम महर्षि की भूमिका को लेकर आर्य विद्वानों में मतभेद है। इस लेख को देने में तात्पर्य यही है कि पाठकों को अपने विवेक के आधार पर स्व-विश्लेषण का अवसर मिल सके। लेखक के मत से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।"

जिन्होंने किन्हीं दस्सा बाबा और उनके शिष्य दीनदयाल जो कि नाना साहब के गुरु थे द्वारा योजनायें बनाने तथा सम्पर्क सूत्र के रूप में कार्य करने की पुष्टि की है। दस्सा बाबा स्वामी पूर्णानन्द व उनका शिष्य दीनदयाल स्वामी दयानन्द ही थे।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम १८५७ में देव दयानन्द की महत्वपूर्ण भूमिका योजनाकार के रूप में प्रेरक एवं सम्पर्क सूत्र के रूप में या फिर शास्त्र को लेकर यह संग्राम लड़ने की रही। इस बात की पुष्टि में स्वामी दयानन्द द्वारा रचित अमर क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभिविनय, यजुर्वेदभाष्य तथा विभिन्न स्थानों पर दिए प्रेरक प्रवचनों से होती है कि स्वामी दयानन्द के हृदय में विदेशी आक्रान्ताओं के साम्राज्य को उखाड़ फैंकने तथा स्वदेशी राज्य स्थापित करने की कितनी तीव्र उत्कंठा मन में थी। उदाहरण ....

'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।' (सत्यार्थप्रकाश ८वाँ समुल्लास)

'विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना वा बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पञ्च बन बैठता है।'

(सत्यार्थप्रकाश १०वाँ समुल्लास)

'जब संवत् १९१४ के वर्ष में तोपों के मारे मंदिर मूर्त्तियाँ अंगरेजों ने उड़ा दी थीं, तब मूर्त्ति कहाँ गई थीं? प्रत्युत् वाघेर लोगों ने जितनी वीरता की, और लड़े, शत्रुओं को मारा, परन्तु मूर्त्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते।' (सत्यार्थप्रकाश ११वाँ समुल्लास)

'महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने वेदभाष्य में लिखते हैं.... **'क्षत्राय पिन्वस्व'** हे महाराजाधिराज ब्रह्मण! अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के लिए, शौर्य, धैर्य, नीति, विनय, पराक्रम और बलादि उत्तमगुणयुक्त कृपा से हम लोगों को यथावत् पुष्टकर, अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा लोग पराधीन कभी न हों।' (यजुर्वेद भाष्य अध्याय ३८ मन्त्र १४)

'हे महाधनेश्वर! हमारे शत्रुओं के बल, पराक्रम को (आप) सर्वथा नष्ट करें। आपकी करुणा से हमारा राज्य और धन सदा वृद्धि को प्राप्त हो।' (आर्याभिविनय १-४३)

'राजन, मैं तो प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर अपने परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूँ कि शीघ्रातिशीघ्र यह राज्य भारत से उठ जाये, मैं तो शीघ्र ही वह दिन देखना चाहता हूँ कि जब भारत का शासन सूत्र हम भारतवासियों के हाथ में हो। महर्षि के इस निर्भयता तथा वीरतापूर्ण तथा अप्रत्याशित उत्तर से वायसराय चकित हो गया, इण्डिया ऑफिस को भेजे गये अपने दस्तावेजों में उसने लिखा कि इस विद्रोही फकीर पर कड़ी नजर रखी जाये।' (दैनिक वीर अर्जुन दिल्ली ६-४-१९६१ के अंक में दीवान अलखधरी जी का लेख)

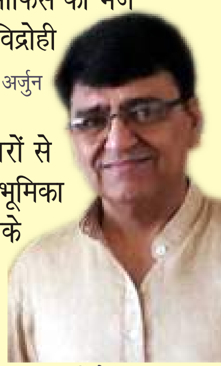

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रकट किए गए इन विचारों से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि होती है। स्वामी जी के जीवन, उनके प्रवचनों, रचित ग्रन्थों से प्रेरणा पाकर ही देश की आजादी के आन्दोलन में कूदने वाले ८० प्रतिशत आर्यसमाजी ही थे।

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'
६०२, जी एच ५३, सैक्टर २० पंचकूला
चलभाष- ०९४६७६०८६८६

हिन्दी दिवस के अवसर पर

राजनीति को राजनीति की भाषा में भाषा का पाठ पढ़ाने का उचित समय

किसे याद न होगा आज से लगभग पाँच वर्ष पूर्व उस समय भाजपा अध्यक्ष और वर्तमान में केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा, 'एक समय भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। आधुनिकता की चकाचौंध में सबकुछ खो गया है। मैं कहना चाहता हूँ कि सबसे ज्यादा क्षति इस देश को पहुँची है तो वो है अंग्रेजी भाषा के कारण। लगता है हम अपनी भाषा और संस्कृति से ऊबते जा रहे है।' उस समय राजनाथ जी के वक्तव्य को विपक्षी प्रवक्ता ने ढ़ोंग बताया था। आरोप-प्रत्यारोप के दौर में भाषा की अस्मिता का सवाल दब गया था। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या आज स्थिति में बदलाव हुआ? आज माननीय राजनाथ जी का मत क्या है? यह इसलिए भी विचारणीय है क्योंकि हम ग्यारहवें विश्व हिन्दी सम्मेलन की तैयारियों में लगे हैं। (१८-२० अगस्त, २०१८)

दुनिया के शायद ही किसी अन्य देश में ऐसा हुआ हो कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी अपनी मातृभाषा के लिये संघर्ष करना पड़ा हो। न्यायालयों की कार्यवाही राजभाषा में करने की माँग को लेकर धरना देने वाले लोगों को जेल भेजा गया हो। कहने को देश के संविधान में हिन्दी संघ की राजभाषा है तो राज्यों में वहाँ की मातृभाषा को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हमारे कई राज्यों का गठन भी भाषा के आधार पर ही हुआ है परन्तु देश व राज्यों की राजभाषा की स्थिति क्या है, यह कौन नहीं जानता?

क्या यह असत्य है कि इस स्थिति के लिए यदि कोई जिम्मेवार है तो वह हैं हमारे नेता जो वोट तो देश की भाषा में माँगते हैं लेकिन सत्ता की कुर्सी तक पहुँचकर नौकरशाही के दबाव में आकर विदेशी भाषा के भक्त बन जाते हैं। यह प्रश्न आखिर कब तक मौन रहेगा कि ऐसा दबाव क्या है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर हिन्दी में भाषण देकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाने वाले स्वनामधन्य नेता भी सत्ता के शिखर पर पहुँचने के बाद बेबस हो जाते हैं?

यहाँ हमारा उद्देश्य राजनीति की तर्क-कुतर्क की परम्परा में भाषा के सवाल को उलझाने का नही, बल्कि भाषा और राष्ट्र की अस्मिता को रेखांकित करना है। यह कोई आश्चर्य नहीं कि 'पक्ष से विपक्ष तक के विभिन्न विचारधाराओं के नेता लाख मतभेदों के बावजूद इस बात पर एकमत हैं कि भारतीय भाषाओं की उपयोगिता समाप्त हो गई है। ज्ञान की भाषा अंग्रेजी ही हो सकती है। सांस्कृतिक बहुलवाद के पुरोधा भी भाषा के सवाल पर अंग्रेजी के खोल में सिमट जाते हैं।'

यह दुर्भाग्यपूर्ण अवधारणा तेजी से फल-फूल रही है कि अंग्रेजी ही देश में महत्व और सम्मान पाने का एकमात्र माध्यम है। शायद यही कारण है कि आज नर्सरी स्कूलों से विश्वविद्यालयों तक अंग्रेजी का बोलबाला है। उच्च शिक्षा की अधिकांश सामग्री अंग्रेजी में ही उपलब्ध है। भाषायी मूढ़ता के कारण अनेक प्रतिभाओं की असमय हत्या हो जाती है क्योंकि एक भाषा विशेष के नाम पर उन्हें अच्छे विश्वविद्यालयों अथवा व्यवसायिक कोर्स में प्रवेश से वंचित होना पड़ता है।

यह सत्य है कि वर्तमान युग में किसी एक भाषा से काम चलने वाला नहीं है। भारतीय भाषाओं में लिखने का मतलब यह नहीं है कि अंग्रेजी नहीं पढ़ने की कसम खा ली गई है। त्रिभाषी होना आज की आवश्यकता है लेकिन अपनी मातृभाषा और मातृभूमि की भाषा की कीमत पर नहीं। हिन्दी के महत्व को दुनिया समझ रही है तभी तो पेंगुइन जैसे प्रकाशन भी हिन्दी में पुस्तकें छापने लगे हैं। आज भी हिन्दी के समाचारपत्र भारत में सर्वाधिक बिकते हैं।

विचारणीय है कि आज भारत में ६० से ७२ घण्टों में अंग्रेजी सिखाने के दावे करने वाले बहुतायात में हैं तो इसका मतलब स्पष्ट है कि तीन महीने में जर्मन, फ्रेंच या रूसी भाषा सीखी जा सकती है तो अंग्रेजी को बचपन से ही लादना क्यों जरूरी

है? आखिर क्यों नहीं विद्यालयों में भारतीय भाषाओं की शिक्षा दी जा रही है? हमारी अपनी भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान की पूंजी को प्रेषित करने से संकोच क्यों?

इस प्रश्न का भी उत्तर तलाशना होगा कि हमारे शहरों जितने बड़े देशों में नोबल विजेता पैदा होते हैं लेकिन हमारे इतने विशाल देश में नहीं होते कहीं इसका कारण विदेशी भाषा की दीवानगी तो नहीं? यह सर्वमान्य तथ्य है कि विदेशी भाषा में हमारे ज्ञान की मौलिकता नहीं हो सकती बल्कि उसे महज रटा जा सकता है। कौन नहीं जानता कि विश्वविख्यात वैज्ञानिक न्यूटन, आइंस्टीन, मैक्सप्लांक बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे। शेक्सपियर, तुलसीदास, महर्षि वेदव्यास आदि के पास कोई डिग्री नहीं थी, इन्होंने सिर्फ अपनी मातृभाषा में काम किया।

जहाँ तक निज भाषा और उसकी संवेदना का प्रश्न है, गाँधीजी की पोती तारा भट्टाचार्य ने राजघाट पर आयोजित

एक कार्यक्रम में कहा था कि- बचपन में वह अपने दादा जी के साथ अंग्रेज राजकुमार से मिली तो उसने तारा से हाथ मिलाते हुए 'हाऊ डू यू डू?' कहा। बालिका तारा उसे बता रही थी 'कल रात उसे बुखार था इसलिए वह.......' तो अंग्रेज राजकुमार मुस्कुरा रहा था। इसपर गाँधीजी ने तारा को आगे कुछ कहने से रोका। बाद में तारा ने पूछा कि आपने मुझे क्यों रोका तो गाँधीजी ने उत्तर दिया, 'हाऊ डू यू डू' के जवाब में तुम्हें केवल 'फाइन' ही कहना चाहिए था क्योंकि अंग्रेजी में केवल यही कहने की परम्परा है' इस पर बालिका तारा ने बिगड़ते हुए कहा, 'दादाजी, यह कैसी भाषा है- जिसमें आप पूछे गए प्रश्न का सही उत्तर देने के बजाय केवल 'फाइन' कहने को मजबूर हैं। नहीं मैं अंग्रेजी नहीं सीखना चाहती।'

स्पष्ट है कि भारतीय भाषाओं के प्रचार, प्रसार और निजी जीवन से रोजमर्रा के कामकाज में अपनी भाषाओं का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए।

काश हमारे नौकरशाहों को समझ आता कि मातृभाषा देश भाषा में शिक्षा से- 'प्रत्येक छात्र के कम से कम ५ से ६ वर्ष बचते। जिन्हें अंग्रेजी, चीनी, रूसी, जापानी, इत्यादि भाषाएँ पढ़नी हों', वे इन बचे हुए वर्ष में सघन पढ़ाई कर पाते। इसके कारण, केवल अंग्रेजी के ही नहीं, अन्य भाषाओं में होते शोधों के प्रति सारा राष्ट्र लाभान्वित हो पाता। पढ़ाई के वर्ष बचने से, राष्ट्र की शिक्षा पर हो रहे अनावश्यक खर्च का कम से कम एक-तिहाई बचता जिसका अन्यत्र उपयोग किया जा सकता है। छात्र जल्दी तैयार होकर परिवार और समाज का सहयोगी बन जाता। उसके जीवन के उत्पादक वर्षों में वृद्धि होती। जन भाषा में चिन्तन का अभ्यास अन्वेषणों को प्रेरित करता। अपनी भाषाओं के सार्वजनिक चलन से अनगिनत लाभ होते, जिसकी कल्पना भी की नहीं जा सकती। हम अपनी भाषाओं को लेकर अनावश्यक हीन ग्रन्थि से पीड़ित न होते।'

अगर हमारे शासक नेता व नौकरशाह इसे समझने में असमर्थ रहते हैं कि विश्व हिन्दी सम्मेलनों को महज एक कर्मकाण्ड की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। आज की आवश्यकता है कि राजनीति को राजनीति की भाषा में ही भाषा का पाठ पढ़ाया जाये। पर यक्ष प्रश्न यह है कि क्या समस्त भाषाप्रेमी दलगत राजनीति से ऊपर उठकर भारतीय भाषाओं के सम्मान के लिए अपने आकाओं से आँख से आँख मिलाने के लिए तैयार हैं?

- विनोद बब्बर

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार)

तीन चेतन देवता माता, पिता और आचार्य

वेदों में देव और देवता शब्द का प्रयोग हुआ है। देव दिव्य गुणों से युक्त मनुष्यों व जड़ पदार्थों को कहते हैं। परमात्मा अर्थात् ईश्वर परमदेव कहलाता है। देव शब्द से ही देवता शब्द बना है। देवता का अर्थ होता है जिसके पास कोई दिव्य गुण हो और वह उसे दूसरों को दान करे। दान का अर्थ भी बिना किसी अपेक्षा व स्वार्थ के दूसरों को दिव्य पदार्थों को प्रदान करना होता है। हम इस लेख में चेतन देवताओं की बात कर रहे हैं। चेतन देवताओं में तीन प्रमुख देव व देवता हैं जो क्रमशः माता, पिता और आचार्य हैं। इन तीनों देवताओं से सारा संसार परिचित है परन्तु इनके देवता होने का विचार वेदों की देन है। वेद इन्हें देवता इसलिए कहता है कि यह तीनों अपने अपने दिव्य गुणों का दान करते हैं। पहले हम माता शब्द पर विचार करते हैं। माता जन्मदात्री स्त्री को कहते हैं। माता के समान शिशु व किशोर का पालन करने वाली स्त्री भी माता कही जाती है। माता देव क्यों कही जाती है? इसका कारण यह है कि माता सन्तान को जन्म देने व पालन करने में अनेक कष्टों को उठाती है और वह सहर्ष ऐसा करती है। वह अपनी सन्तान से किसी प्रतिकार, धन व सेवा आदि के माध्यम से भुगतान की अपेक्षा नहीं करती। यह बात और है कि विवेकशील व बुद्धिमान सन्तानें अपने माता-पिता के उपकारों को जानकर उनकी सेवा करते हैं और माता-पिता के उपकारों से उऋण होने का प्रयत्न करते हैं। इसका लाभ उनको भविष्य में मिलता है।

वह जब विवाहित होकर स्वयं माता-पिता बनते हैं और उनकी सन्तानें होती हैं तो उनके अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा के संस्कार उनकी अपनी बाल सन्तानों में आते हैं। इन संस्कारों का लाभ यह होता है कि वह भी बड़े होकर अपने माता-पिता की सेवा करते हैं। अतः सभी युवाओं व दम्पतियों को अपने माता-पिता की सेवा अवश्य करनी चाहिये। इसका उनको यह लाभ होगा कि उनकी सन्तानें भी बड़ी होकर उनकी सेवा किया करेंगी।

संक्षेप में यह भी लिख दें कि माता को सन्तान को अपने गर्भ में धारण करने में अनेक प्रकार की कठिनाईयों व पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है। १० माह की गर्भावस्था में नाना प्रकार की समस्याओं से उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। चिकित्सक माताओं को अनेक प्रकार की सलाह देते हैं व ओषधियाँ बताते हैं जिनका पालन माताओं को करना होता है। सन्तान के जन्म के बाद भी शिशु की रक्षा, उसके पालन एवं पोषण में बहुत सावधानी रखनी पड़ती है। अपना भोजन व आचरण भी एक माता के उच्च गुणों से युक्त युवती के अनुरूप करना पड़ता है जिसमें उन्हें अपनी अनेक इच्छाओं व सुख-सुविधाओं का त्याग करना पड़ता है। ऐसा करके सन्तान सकुशल जन्म ले पाती है व उसका पालन हो पाता है। आज हमने दो वर्ष की एक कन्या से फोन पर बातचीत की। यह दो वर्ष की कन्या अभी शब्दों को स्पष्ट रूप से बोल नहीं पाती। उसके माता-पिता, दादा-दादी व बुआ उसे बोलने का अभ्यास करा रहे हैं। अभी ६ माह से १ वर्ष का समय और लग सकता है। इससे यह ज्ञात होता है कि सन्तान के निर्माण में माता की प्रमुख भूमिका होती है। माता को प्रसव पीड़ा तो होती ही है साथ ही भाषा का ज्ञान कराने में भी बहुत समय देना पड़ता है। अतः सन्तान का यह कर्तव्य होता है कि वह बड़ी होकर माता को सब सुख सुविधायें प्रदान करें और उन्हें मानसिक, शारीरिक व अन्य किसी प्रकार की असुविधा व दुःख न होने दे। सन्तानों का कल्याण करने और अनेक कष्ट व दुःख सहन

करने के कारण माता अपनी सभी सन्तानों के लिए पूजनीय देवता होती है।

पिता भी सन्तान के लिए एक देवता होता है। पिता से ही सन्तान होती है। सन्तान के जन्म में माता व पिता दोनों की ही महत्वपूर्ण भूमिका है। माता-पिता के द्वारा एक आत्मा माता के गर्भ में प्रविष्ट होती है। आत्मा के माता के शरीर होने में ईश्वर की प्रमुख भूमिका होती है। ईश्वर यह सब कैसे करता है, अल्पज्ञ जीवात्मा इसे पूर्णतः नहीं जान सकता। ईश्वर ने सन्तान उत्पन्न करने का अपना एक विधान बना रखा है। उसी के अनुसार सन्तान जन्म लेती है। पिता की भूमिका माता व भावी शिशु के लिए आवश्यकता की सभी सामग्री व सुविधायें जुटाने की होती है। माता को पौष्टिक भोजन चाहिये। इसके साथ स्वस्थ सन्तान के लिए माता का जीवन चिन्ताओं व दुःखों से मुक्त एवं प्रसन्नता से युक्त होना चाहिये। माता जैसा साहित्य पढ़ती है, विचार व चिन्तन करती है, प्रायः वैसी ही सन्तान बनती है। माता-पिता के चिन्तन के अनुरूप सन्तान की आत्मा में संस्कार उत्पन्न होते जाते हैं। वही संस्कार सन्तान के जन्म के बाद के जीवन में पल्लवित व पुष्पित होते हैं। अतः यह आवश्यक होता है कि गर्भावस्था काल में माता व पिता दोनों सात्विक विचार रखें। वह ईश्वर व जीवात्मा विषयक वैदिक मान्यताओं का अध्ययन किया करें। वह वैदिक साहित्य पढ़ें व अपने मन में ऐसे भाव उत्पन्न करें कि हमारी सन्तान धार्मिक, साहसी, निर्भीक, देशभक्त, ज्ञानी, सच्चरित्रता आदि के गुणों से युक्त होगी। यदि ऐसा करते हैं तो सन्तान ऐसी ही बन जाती है। पिता की भूमिका माता के समान ही महत्वपूर्ण होती है। इसलिए उसे माता के बाद दूसरा स्थान प्राप्त है। सन्तान का जन्म हो जाने के बाद बच्चे की शिक्षा, उसके पोषण व निर्माण का दायित्व पिता का होता है।

बच्चे का शारीरिक व बौद्धिक विकास भली प्रकार से हो रहा है, पिता को इसका ध्यान रखना पड़ता है। यदि सन्तान को अच्छे शिक्षक व सामाजिक वातावरण मिलता है तो सन्तान एक सुसंस्कृतज्ञ सन्तान बनती है। आजकल वातावरण कुछ बिगड़ गया है। समाज पर विदेशी मानसिकता का प्रभाव बढ़ रहा है। इस कारण सन्तान में वैदिक संस्कार कम व पाश्चात्य सभ्यता के संस्कार अधिक देखे जाते हैं। विकल्प रूप में बच्चों को यदि गुरुकुलीय शिक्षा मिले तो वह अच्छी प्रकार से संस्कारित हो सकते हैं।

आज अच्छे गुरुकुलों का भी अभाव है जहाँ आचार्यगण माता-पिता के समान व उससे भी अच्छा, स्वामी श्रद्धानन्द जी

के समान, व्यवहार करें और बच्चों की सभी प्रकार की शैक्षिक व स्वास्थ्य विषयक आवश्यकतायें गुरुकुल में पूर्ण हों। आर्यसमाज के कुछ गुरुकुल इसकी आंशिक पूर्ति ही करते हैं। आर्यसमाज के गुरुकुलों में वैल्यू एडीसन की आवश्यकता अनुभव होती है। महर्षि दयानन्द ने अपनी पुस्तक व्यवहारभानु में जैसे आचार्य और शिष्यों का उल्लेख किया है, वैसे आचार्य और शिष्य यदि हों, तो समाज का कल्याण हो सकता है। देश की सरकार मैकाले की पद्धति को प्रमुखता देती है। उसके लिए मोटे मोटे वेतन भी शिक्षकों को देती है। इस पर भी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे संस्कारित न होकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर भी देश विरोधी नारे लगाते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। भ्रष्टाचार की घटनायें लगातार बढ़ रही हैं। अपराध कम होने के बजाय तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। कश्मीर में युवक संगठित रूप से पत्थर बाजी करते हैं और सरकार मूक दर्शक बन कर देखती है। कुछ करें तो मानवाधिकारवादी लोग सरकार की आलोचना करते हैं। ऐसा लगता है कि सेना के मार खाने के अधिकार हैं अपनी रक्षा करने के नहीं। यह देखकर यही लगता है कि यदि माता-पिता संस्कारित हों और आचार्य भी वैदिक संस्कारों से युक्त हों तभी बच्चों व शिक्षा जगत का कल्याण हो सकता है। पिता दूसरा देव है। आजकल के पिता सन्तानों को धन व सुख सुविधायें तो भरपूर देते हैं परन्तु संस्कार न माता-पिता के पास हैं और न स्कूलों में, इसलिए नई पीढ़ी आस्तिकता व संस्कारों से दूर जा रही है और वह कार्य कर रही है जो उसे करने नहीं चाहिये।

आचार्य भी एक देवता होता है। वह बच्चों को दूसरा जन्म, उन्हें विद्यावान् कर देश व समाज के लिए उपयोगी बनाता है जो आगे चलकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को सिद्ध करने में समर्थ हो सकते हैं व इनकी योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। आचार्य आचरण की शिक्षा देने वाले गुरु को कहते हैं। आचरण की शिक्षा स्वयं सदाचार को अपने चरित्र में धारण करके ही दी जा सकती है। यदि गुरु सदाचारी नहीं होगा तो शिष्य भी सच्चरित्र नहीं हो सकते। अतः आचार्यत्व का कार्य उच्च चरित्र के ज्ञानी व्यक्तियों को ही करना चाहिये, तभी संस्कारित व सच्चरित्र युवक देश को मिल सकते हैं। प्राचीन काल में राम, कृष्ण व

असंख्य ऋषि मुनि अच्छे आचार्यों की ही देन होते थे। आज वैसे आचार्य होना बन्द हो गये हैं तो राम, कृष्ण, चाणक्य, दयानन्द जैसे नागरिक व महापुरुष होना भी बन्द हो गये हैं। देश की सरकार को चाहिये कि वह अध्यापकों व आचार्यों की सच्चरित्रता के उच्च मापदण्ड बनायें। सभी गुरुजन आस्तिक व वेदों के जानकार होने चाहिये। वे मांसाहारी न हों, धूम्रपान व अण्डों का सेवन करने वाले भी न हों। वह त्याग व सन्तोष की वृत्ति को धारण करने वाले हों। आचार्यगण यम व नियम का पालन करते हों, योगी व ज्ञानी हों। वह वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करने वाले भी होने चाहिये। ऐसे आचार्य यदि होंगे तभी वह नई संस्कारित युवा पीढ़ी को बना सकते हैं। ऐसे गुणों वाले अध्यापक ही आचार्य कहलाने के योग्य होते हैं। शब्द, भाषा, सामाजिक व राजनैतिक विषयों सहित विज्ञान व गणित आदि विषयों का ज्ञान देने वाले अध्यापक तो हो सकते हैं आचार्य नहीं। आचार्य बनने के लिए उन्हें अपना जीवन वैदिक मूल्यों पर आधारित आचार्य का जीवन बनाना होगा। तभी वह आचार्य कहला सकेंगे और उनके शिष्य चरित्रवान् होने सहित देश व समाज के हितों की पूर्ति करने वाले होंगे। सच्चा आचार्य अपने शिष्य को सच्चरित्रता व ईश्वर, जीवात्मा विषयक जो ज्ञान देता है, उस कारण से वह देवता होता है।

ज्ञान ही संसार की सबसे श्रेष्ठ वस्तु है। ज्ञानहीन मनुष्य तो पशु समान होता है। मनुष्य को पशु से मनुष्य व ज्ञानवान् बनाने में माता, पिता व आचार्य तीनों का अपना-अपना योगदान है। अतः तीनों ही किसी भी मनुष्य के लिए आदरणीय, सम्माननीय व पूज्य होते हैं। इन सबकी तन, मन व धन से सेवा करना सभी सन्तानों व शिष्यों का धर्म व कर्तव्य है।

- मनमोहन कुमार आर्य
१९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष-०९४१२९८५१२१

नहीं रहे अटल जी

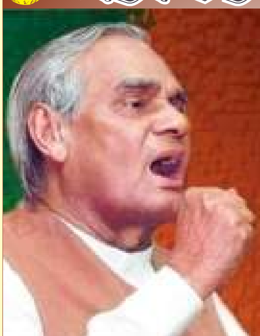

बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ
पाँवों के नीचे अंगारे
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ
निज हाथों में हँसते-हँसते
आग लगाकर जलना होगा
क़दम मिलाकर चलना होगा

—अटल बिहारी वाजपेयी

व्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यांमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

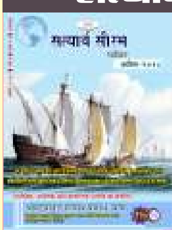

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता- २

ईश्वरप्रसूत भौतिकी के नियम

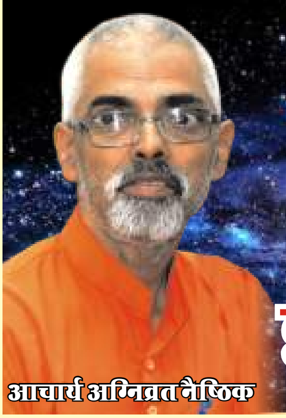

प्रबुद्ध पाठकगण! जरा विचारें कि यदि ईश्वर नाम की कोई सत्ता वास्तव में संसार में विद्यमान है, तो वह हमारे विश्वास, आस्थाओं के सहारे जीवित नहीं रहेगी। वह सत्ता निरपेक्ष रूप से यथार्थ विज्ञान के द्वारा जानने योग्य भी होगी। उसका एक निश्चित स्वरूप होगा। उसके निश्चित नियम होंगे। ईश्वर के भौतिक नियमों के विषय में 'Richard P-Feynman' का कथन है-

"We can imagine that this complicated array of moving things which constitutes 'the world' is something like a great chess game being played by the god, and we are observers of the game. We do not know what the rules of the games are, all we are allowed to do is to watch the playing. Of course, if we watch long enough, we may eventually watch on to a few rules. The rules of the game are what's we mean by fundamental physics." (Lectures on Physics-Pg. 13)

इसका आशय यह है कि यह संसार निश्चित नियमों से बना व चल रहा है। वे नियम ईश्वर द्वारा बनाये गये हैं और वही उनको लागू करके संसार को बनाता व चलाता है। वैज्ञानिक उन असंख्य नियमों में से कुछ को जान भर सकते हैं, उन्हें बना वा लागू नहीं कर सकते। यहाँ फाइनमेन ने एक भारी भूल अवश्य कर दी, जो 'God' के स्थान पर 'Gods' लिख दिया। यदि नियम बनाने वाले अनेक 'Gods', हों तो उन नियमों में सामंजस्य नहीं बैठेगा। सभी 'Gods' को समन्वित व नियन्त्रित करने वाला कोई Supreme God अर्थात् 'God' की सत्ता अवश्य माननी होगी और मूलभूत भौतिकी के नियम बनाने वाला एक ही 'God' होगा।

अब हम विचारें कि उस 'God' अर्थात् ईश्वर के भौतिक नियम ही मूलभूत भौतिक विज्ञान नाम से जाने जाते हैं। इसी विज्ञान पर सम्पूर्ण भौतिक विज्ञान, खगोल, रसायन, जीव, वनस्पति, भूगर्भ, इंजीनियरिंग, मेडिकल सायंस आदि सभी शाखाएँ आश्रित हैं। मूलभूत भौतिकी के बिना संसार में विज्ञान का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है। जब ईश्वर के भौतिक नियम जिनसे इस संसार को जाना जाता है, ब्रह्माण्ड भर के बुद्धिवादी प्राणी वा मनुष्यों के लिए समान हैं, तब उस ईश्वर को जानने के लिए आवश्यक उसी के बनाये आध्यात्मिक नियम अर्थात् अध्यात्म विज्ञान (जिसे प्रायः धर्म कहा जाता है) भी तो सभी मनुष्यों के लिए समान ही होंगे। आश्चर्य है कि इस साधारण तर्क को समझने की भी बुद्धि ईश्वरवादियों में नहीं रही, तब निश्चित ही यह उनकी कल्पनाप्रसूत ईश्वरीय धारणा व कल्पित उपासना-पूजा पद्धति का ही फल है, जहाँ सत्य के अन्वेषण की वैज्ञानिक मेधा कहीं पलायन कर गयी ।

ईश्वरवादी वैज्ञानिक केवल Feynman ही नहीं हैं अपितु अनेक प्रतिभाशाली वैज्ञानिक ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते रहे हैं व करते हैं। क्योंकि वर्तमान विज्ञान केवल प्रयोगों, प्रेक्षणों व गणितीय व्याख्याओं के सहारे ही जीता है और यही उसका स्वरूप भी है। इस कारण वह ईश्वर की व्याख्या इनके सहारे तो, नहीं कर सकता और न वह इसकी व्याख्या की इच्छा करता है। उधर Stephen Hawking ने तो The Grand Design पुस्तक में मानो संसार के सभी ईश्वरवादियों को मूर्ख समझकर निरर्थक व्यंग्य किये हैं। विज्ञान का नाम लेकर स्वयं अवैज्ञानिकता का ही परिचय दिया है। इस पुस्तक से पूर्व उन्हीं की पुस्तकों में वे ईश्वर की सत्ता स्वीकार करते हैं, फिर मानो अकस्मात् वे भारी खोज करके संसार में घोषणा करते हैं कि ईश्वर नाम की कोई सत्ता ब्रह्माण्ड में नहीं है। उधर आज संसार में ऐसा भयंकर पाप प्रवाह चल रहा है कि ईश्वरवादी कहाने वाले भी ऐसा व्यवहार कर रहे हैं, मानो उनके ऊपर ईश्वर नाम की कोई

सत्ता न हो, वे अहंकारी मानव स्वयं को ही सर्वोच्च सत्ता की भाँति व्यवहार का प्रदर्शन करते देखे जाते हैं। इस कारण हम संसार भर के वैज्ञानिक अनीश्वरवादियों व ईश्वरवादियों दोनों का ही आह्वान करना चाहेंगे कि वे ईश्वर की सत्ता पर खुले मस्तिष्क से विचार करने को उद्यत हो जाएँ। आज अनेक ईश्वरवादी विद्वान् ईश्वरवादी वैज्ञानिकों के प्रमाण देते देखे वा सुने जाते हैं, परन्तु हम ईश्वरीय सत्ता का प्रमाण किसी वैज्ञानिक से लेना आवश्यक नहीं समझते। अब वह समय आयेगा जब वर्तमान वैज्ञानिक हम वैदिक वैज्ञानिकों को प्रमाण मानना प्रारम्भ करके नये वैज्ञानिक युग का सूत्रपात करेंगे अर्थात् हमारे साथ मिलकर कार्य करेंगे। हम आज विश्वभर के समस्त प्रबुद्ध समाज से घोषणापूर्वक कहना चाहेंगे कि यदि ईश्वर नहीं है, तो सब झंझट छोड़कर नितान्त नास्तिक व स्वच्छन्द बन जाएँ और यदि ईश्वर सिद्ध होता है, तो उसकी आज्ञा में चलकर मर्यादित जीवन जीते हुये संसार को सुखी बनाने का प्रयत्न करें, क्योंकि सम्पूर्ण संसार उसी ईश्वर की रचना है और इस कारण सभी मानव ही नहीं, अपितु प्राणिमात्र परस्पर भाई-भाई हैं। **क्रमशः......**

– आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (वैदिक वैज्ञानिक)
('वेदविज्ञान-अलोकः' से उद्धृत)

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०९/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (सप्तम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ प	१		श्व १	१		२ दो		२	हीं २
३	३	३ स्थ	३	३	प ३		४	हीं ४	
५	५	वें ५	५			७ प	७	त्रा ७	७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. अग्नि आदि ऋषियों का गुरु कौन है?
२. परमेश्वर रागी है वा विरक्त?
३. परमेश्वर वेदविद्या का उपदेश जीवात्मा में कैसे प्रकाशित करता है?
४. बाइबिल कुरान आदि ईश्वरोक्त हैं या नहीं?
५. वायु ऋषि की आत्मा में परमेश्वर ने किस वेद का प्रकाश किया?
६. सृष्टि की आदि में उत्पन्न चारों ऋषि सब जीवों से अधिक क्या थे?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०७/१८ का सही उत्तर

१. समर्पित २. अवस्थान्तर ३. उद्धार ४. परोपकार
५. नहीं ६. त्रिकालदर्शी ७. अविरोधी

"विस्तृत नियम पृष्ठ २४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अक्टूबर २०१८

समाचार

वृहद् वृष्टि यज्ञ का शुभारम्भ

मगरा-पूंजला स्थित आर्य समाज मंदिर महर्षि पाणिनिनगर, जोधपुर में हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी वर्षा की मंगलकामना हेतु १४ दिवसीय यज्ञ का आयोजन किया गया। साथ ही आर्य समाज का १६वाँ वार्षिकोत्सव ६, १० व ११ अगस्त २०१८ को मनाया गया। जिसमें अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। – कैलाश चन्द्र आर्य, प्रधान

आचार्य बालकृष्णा का जन्म दिवस मनाने का निर्णय

पतंजलि योग समिति, निम्बाहेड़ा की मण्डी चौराहा स्थित पब्लिक पार्क में आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से पतंजलि योगपीठ के महामंत्री व आयुर्वेद के वर्तमान अधिकारी विद्वान् आचार्य बालकृष्ण का जन्म दिवस 'जड़ी-बूंटी' दिवस के रुप में मनाने का निर्णय लेकर ४ अगस्त २०१८ को आर्य समाज एवं पतंजलि योग समिति के अनेक अधिकारी व सदस्यों की उपस्थित में भव्य रूप में मनाया गया।

स्व. श्री हरि सिंह जी आर्य की स्मृति में मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता

स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री हरि सिंह जी आर्य की ग्यारहवीं पुण्यतिथि पर ६ सितम्बर २०१८ को 'सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार न्यास' जयपुर की ओर से 'मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता' आयोजित की जायेगी। प्रतियोगिता दो वर्गों कक्षा ६ से ८ तथा ६ से १२ में होगी। पुरस्कारस्वरूप राशि प्रदान की जावेगी। – ओ. पी. वर्मा, मंत्री, चलभाष- ६८८७३८४६६८

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ०७/१८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०७/१८** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.); श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री गोवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.); श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; भोपाल (म.प्र.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री किशनराम आर्य बीलू; नागौर (राज.); श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजयनगर (इन्दौर, म.प्र.), ज्योति कुमारी पुत्री श्री गौरीशंकर आर्य; महेन्द्रगढ़ (हरियाणा), श्री प्रधानजी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्री रमेशचन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री हर्ष वर्द्धन आर्य; नेमदारगंज (बिहार), श्री रेवन्त राम आर्य; बीकानेर (राज.), श्री रामप्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ.प्र.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ २४ पर अवश्य पढ़ें।

।।ओ३म्।।

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुम्भ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

25, 26, 27, 28 अक्टूबर- 2018

विश्व शान्ति यज्ञ, योग, तथा सामाजिक व राष्ट्रीय विषयों पर
तपोनिष्ठ संन्यासियों एवं वैदिक विद्वानों के प्रेरणास्पद उद्‍बोधन एवं प्रवचन

सम्मेलन स्थल

स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर- 10, दिल्ली

अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनावें।

स्वस्थ रहने की १० अच्छी आदतें

१. कहीं भी बाहर से घर आने के बाद, किसी बाहरी वस्तु को हाथ लगाने के बाद, खाना बनाने से पहले, खाने से पहले, खाने के बाद और बाथरूम का उपयोग करने के बाद हाथों को अच्छी तरह साबुन से धोएँ। यदि आपके घर में कोई छोटा बच्चा है तब तो यह और भी जरूरी हो जाता है। उसे हाथ लगाने से पहले अपने हाथ अच्छे से जरूर धोएँ।

२. घर में सफाई पर खास ध्यान दें, विशेषकर रसोई तथा शौचालयों पर। पानी को कहीं भी इकट्ठा न होने दें। सिंक, वॉश बेसिन आदि जैसी जगहों पर नियमित रूप से सफाई करें तथा फिनाइल, फ्लोर क्लीनर आदि का उपयोग करते रहें। खाने की किसी भी वस्तु को खुला न छोड़ें। कच्चे और पके हुए खाने को अलग-अलग रखें। खाना पकाने तथा खाने के लिए उपयोग में आने वाले बर्तनों, फ्रिज, ओवन आदि को भी साफ रखें। कभी भी गीले बर्तनों को रैक में नहीं रखें, न ही बिना सूखे डिब्बों आदि के ढक्कन लगाकर रखें।

३. ताजी सब्जियों-फलों का प्रयोग करें। उपयोग में आने वाले मसाले, अनाजों तथा अन्य सामग्री का भंडारण भी सही तरीके से करें तथा एक्सपायरी डेट वाली वस्तुओं पर तारीख देखने का ध्यान रखें।

४. बहुत ज्यादा तेल, मसालों से बने, बेक्ड तथा गरिष्ठ भोजन का उपयोग न करें। खाने को सही तापमान पर पकाएँ और ज्यादा पकाकर सब्जियों आदि के पौष्टिक तत्व नष्ट न करें। साथ ही ओवन का प्रयोग करते समय तापमान का खास ध्यान रखें। भोज्य पदार्थों को हमेशा ढककर रखें और ताजा भोजन खाएँ।

५. खाने में सलाद, दही, दूध, दलिया, हरी सब्जियों, साबुत दाल-अनाज आदि का प्रयोग अवश्य करें। कोशिश करें कि आपकी प्लेट में 'वैरायटी ऑफ फूड' शामिल हो। खाना पकाने तथा पीने के लिए साफ पानी का उपयोग करें। सब्जियों तथा फलों को अच्छी तरह धोकर प्रयोग में लाएँ।

६. खाना पकाने के लिए अनसैचुरेटेड वेजिटेबल ऑइल (जैसे सोयाबीन, सनफ्लॉवर, मक्का या ऑलिव ऑइल) के प्रयोग को प्राथमिकता दें। खाने में शक्कर तथा नमक दोनों की मात्रा का प्रयोग कम से कम करें। जंकफूड, सॉफ्ट ड्रिंक तथा आर्टिफिशियल शक्कर से बने ज्यूस आदि का उपयोग न करें। कोशिश करें कि रात का खाना आठ बजे तक हो और यह भोजन हल्का-फुल्का हो।

७. अपने विश्राम करने या सोने के कमरे को साफ-सुथरा, हवादार और खुला-खुला रखें। चादरें, तकियों के गिलाफ तथा पर्दों को बदलते रहें तथा मैट्रेस या गद्दों को भी समय-समय पर धूप दिखाकर झटकारें।

८. मेडिटेशन, योग या ध्यान का प्रयोग एकाग्रता बढ़ाने तथा तनाव से दूर रहने के लिए करें।

९. कोई भी एक व्यायाम रोज जरूर करें। इसके लिए रोजाना कम से कम आधा घण्टा दें और व्यायाम के तरीके बदलते रहें, जैसे कभी एयरोबिक्स करें तो कभी सिर्फ तेज चलें। अगर किसी भी चीज के लिए वक्त नहीं निकाल पा रहे तो दफ्तर या घर की सीढ़ियाँ चढ़ने और तेज चलने का लक्ष्य रखें। कोशिश करें कि दफ्तर में भी आपको बहुत देर तक एक ही पोजीशन में न बैठा रहना पड़े।

१०. ४५ की उम्र के बाद अपना रूटीन चेकअप करवाते रहें और यदि डॉक्टर आपको कोई औषधि देता है तो उसे नियमित लें। प्रकृति के करीब रहने का समय जरूर निकालें। बच्चों के साथ खेलें, अपने पालतू जानवर के साथ दौड़ें और परिवार के साथ हल्के-फुल्के मनोरंजन का भी समय निकालें।

लेखक- किंशुक चक्रवर्ती
साभार- वेब दुनिया

सेवा ही परम धर्म

कथा सरित

सेवा परम धर्म है। सेवा से ही जीवन सार्थक हो सकता है। पर सेवा कर्म अति कठोर है। सीमित क्षेत्र में गृह आदि में जो सेवा होती है वह प्रायः सकाम सेवा होती है। सन्तान बड़ों की सेवा करती है तो उसके बालक भी सेवा सीखकर अपना कर्तव्य निभा सकते हैं। वास्तविक सेवा वही होती है जो बिना किसी प्रतिफल की आशा से विशुद्ध परोपकार की भावना से की जाये। ऐसा ही प्रेरक प्रसंग पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का यहाँ प्रस्तुत है-

विद्यासागरजी का निवास मकान की दूसरी मंजिल पर था। एक दिन कोई सज्जन आये और बाहर सेवक को एक आवश्यक पत्र यह कहते हुए दे गये कि इसे पण्डितजी को ऊपर पहुँचा देना। सेवक उस पत्र को लेकर जीने के ऊपर जा रहा था। गर्मी विशेष थी इससे वह पसीने में तर बतर बेहाल सा था। सीढ़ी चढने से उसे कठिनाई हुई और बीच की एक सीढ़ी तक पहुँचते ही वह आगे न चढ़ सका वहीं बैठ गया। विद्यासागर किसी काम से नीचे आ रहे थे। उतरते ही नौकर को सीढ़ी पर सोते देखकर वह तुरन्त समझ गये कि वह किसी आवश्यक काम से मेरे पास ऊपर आ रहा होगा। उसके हाथों में लगा पत्र उन्होंने धीरे से निकाला और पढ़ने के बाद ऊपर चढ़कर अपने कमरे में यथास्थान रखकर पुनः एक पंखा और एक लोटा जल लेकर नीचे आये सीढ़ी पर बेहाल सेवक की हवा करने लगे। वह कुछ होश में आया तब उसे पानी पिलाया और फिर उसको पंखा करने लगे।

इसी बीच पण्डितजी के कोई मित्र वहाँ आये। ऊपर चढ़ने पर बीच में सीढ़ी का दृश्य देखकर वह एकदम अचम्भित होकर बोले- आपने तो गजब कर दिया। सात-आठ रुपया महीना पाने वाले नौकर के ऊपर हवा कर उसकी सेवा कर रहे हैं।

करुणापूर्ण शब्दों में तुरन्त ही विद्यासागरजी बोले- तो क्या हुआ? मेरे पिताजी भी तो सात-आठ रुपया महीना पाते थे। एक दिन सड़क पर चलते-चलते बेहोश हो गये थे। उस समय सड़क के सहारे बैठे एक फेरीवाले ने उनकी हवा कर पानी पिलाया था। मैं तो इस नौकर में अपने स्वर्गीय पिता की मूर्ति देख रहा हूँ। इस वाक्य को सुनकर मित्र लज्जित हुए साथ ही उन्हें विद्यासागर की विशाल हृदयता का एक और उदाहरण देखने को मिला। ऐसी सेवा भावना के बल पर पण्डित ईश्वरचन्द्र ने विश्व में ख्याति प्राप्त कर अपने जीवन को सार्थक बनाया।

साभार- हितोपदेशक

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

विकासवाद मिथ्या अवधारणा

क्रमिक विकास विकासवाद में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। श्रेष्ठ से, श्रेष्ठतर प्रजाति उत्पन्न होती है। अपूर्ण से पूर्णता की ओर जगत् अग्रसर है। अयोग्यता लुप्त हो रही है योग्यता स्थापित हो रही है।

परन्तु विचार करने पर यह भी आभासी प्रतीत होता है।

१. विकास क्रम में गिरगिट से आगे की प्रजाति यहाँ तक कि मनुष्य के भी शत्रु हैं फिर शत्रु से बचने की एक अभिनव

योग्यता जो गिरगिट में पायी जाती है, अर्थात् गिरगिट अपने रंग को बदलकर उसे आसपास के वातावरण के अनुरूप कर उसमें छिपने में समर्थ हो शत्रु से बच जाता है, आगे की प्रजातियों में क्यों छोड़ी गयी?

२. मोर के शत्रु क्या आज नहीं हैं? फिर उसके परों ने कमजोरी को क्यों ग्रहण किया जो उसे दूर व तीव्र उड़ान नहीं भरने देते?

३. जीवन संघर्ष में विजय प्राप्त करने के लिए तैरने की कला

पशु-पक्षी सब उसी की रचना-

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ - युज. ३१/६

'..........ग्राम और वन के सब पशुओं को भी उसी ने उत्पन्न किया है, तथा सब पक्षियों को भी बनाया है। और भी सूक्ष्म देहधारी कीट, पतंग आदि सब जीवों के देह भी उसी ने उत्पन्न किए हैं।

अतीव उपयोगी है। वह मनुष्य जैसी सर्वाधिक विकसित प्रजाति में क्यों लुप्त हुई? जिस गाय भैंस की सारी जिन्दगी रेगिस्तान में निकलती है उसमें तैरने की क्षमता क्यों है?

४. दृष्टि क्षमता, घ्राणशक्ति, गति इत्यादि जीवन संघर्ष में अतीव उपयोगी शक्तियाँ मानव से नीची समझी जाने वाली प्रजातियों में अधिक हैं। विकास के विरुद्ध यह ह्रास क्यों हुआ?

५. जिन गुणों पर जिन प्राणियों को गर्व होना चाहिये वे विकास के क्रम में क्यों छूटे? यथा बया द्वारा घोंसला निर्माण की अद्भुत कला, मधुमक्खी द्वारा शहद निर्माण की कला आदि। कोयल ने अपना सुरीला स्वर आगे क्यों छोड़ा? नयनाभिराम रंगबिरंगी मछलियाँ व तितलियाँ विकास के अन्तिम क्रम तक अपने सुन्दर रंगों को क्यों नहीं ले गईं?

६. पक्षीगण सात समुन्दर पार एक स्थान से दूसरे स्थान तक आते-जाते हैं। दिशा निर्धारण करने की अद्भुत क्षमता (वे तारों की सहायता से ऐसा करते हैं, अद्यतन ऐसा माना जाता है) मनुष्य तक क्यों नहीं पहुँची? इसका तो और भी विकास होना चाहिये था। पर क्या समुद्र में भटका कोई मनुष्य अगर उसके पास कम्पास नहीं है तो तट पर पहुँच सकता है? कदाचित नहीं।

सैंकड़ों सहस्त्रों उदाहरण हैं आप विचार करते जायें। विकासवाद पूर्णतः मिथ्या कल्पना है। वस्तुस्थिति यह है कि जैसा महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में बलपूर्वक स्थापित किया है, आज भी जितनी भी योनियाँ हैं, सृष्टि के प्रारम्भ में भी वे सबकी सब थीं। सन्तति क्रम में आज भी उनका वंश चल रहा है। वे योनियाँ एक दूसरे से निरपेक्ष हैं, स्वतंत्र हैं। रूप, रंग, आकार, क्रियाओं में परिस्थितियों के वशीभूत कुछ परिवर्तन अवश्य होते हैं पर वे इतने व्यापक कदापि नहीं होते न ही निरन्तर होते हैं कि नयी नयी प्रजाति बनने लग जावे। अतः परमेश्वर ने ही सृष्टि के प्रारम्भ में इन लाखों प्रकार के प्राणियों के शरीर बनाए यह ध्रुव सत्य है। इसी सत्य का उद्घाटन ऋषिवर देव दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में किया है। ऋषि की इस मान्यता का मूल यजुर्वेद के ३१ वें अध्याय के आठवें मंत्र में उपस्थित है।

तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः॥ - यजु.३१/८

अर्थात् 'घोड़े आदि जबाड़ों वाले, बकरी, भेड़ आदि सब पशु उसी परमात्मा से उत्पन्न हुए। अर्थात् विभिन्न योनियाँ सृष्टि के आदिकाल से विद्यमान हैं।

- अशोक आर्य, नवलखा महल, गुलाब बाग

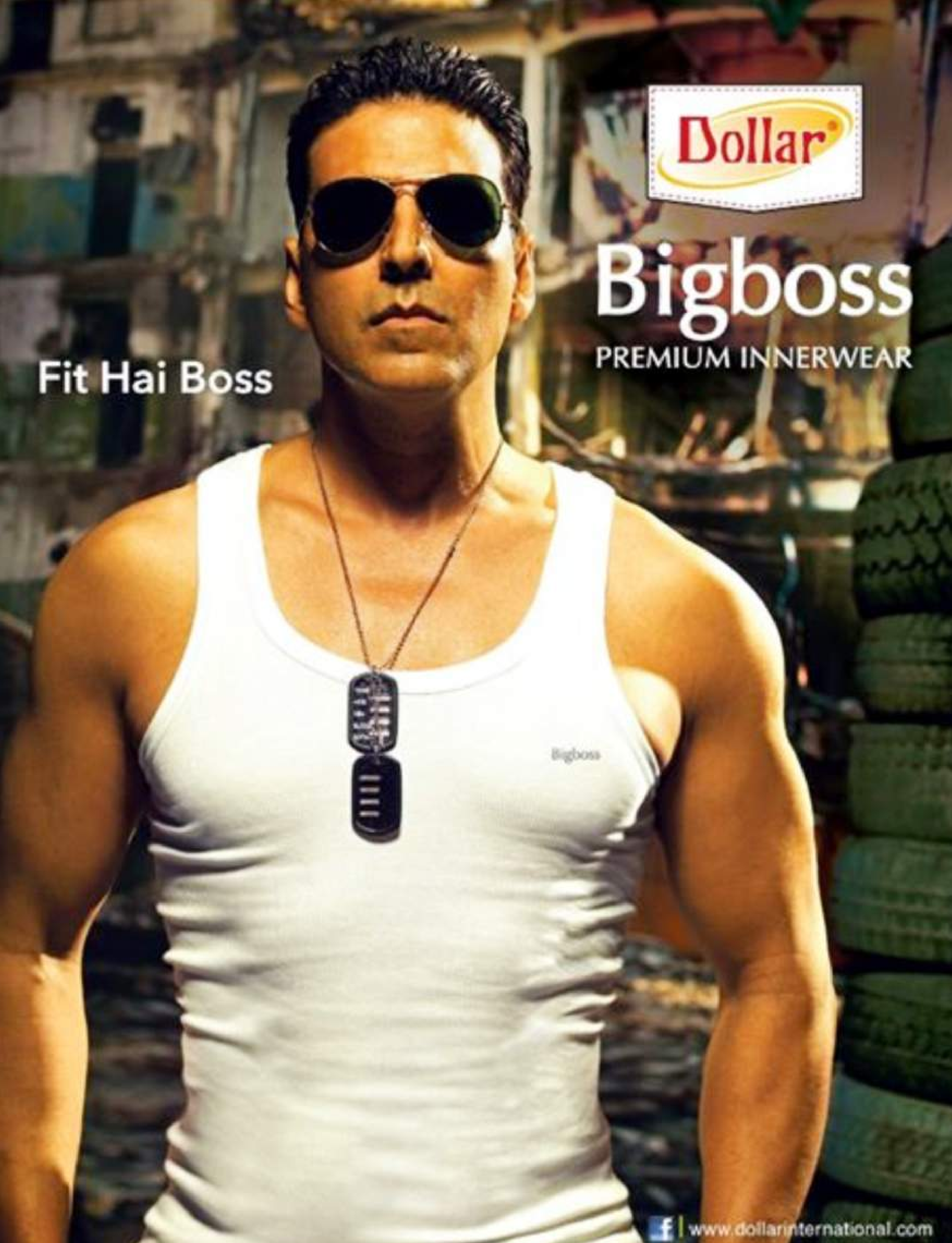
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarinternational.com

यह अपने मन में निश्चित जाने कि दण्ड, कमण्डलु और काषायवस्त्र आदि चिह्न-धारण धर्म का कारण नहीं है। सब मनुष्यादि प्राणियों की सत्योपदेश और विद्यादान से उन्नति करना संन्यासी का मुख्य कर्म है।

सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ १३१

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर